श्रीकमला-कल्पतरु

पुष्प ३

'श्री-सूक्त' विधान एवं प्रयोग

वन्दे लक्ष्मी
क्षीर-समुद्र-राज-तनया
श्रीरङ्ग-धामेश्वरि!

प्रकाशक : परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

मुम्बई-शाक्त-सम्मेलन
(आठवाँ अधिवेशन)

संक्षिप्त विज्ञप्ति

परब्रह्म-रूपा
श्री श्रीविद्या की साधना

'**मुम्बई-शाक्त-सम्मेलन**' के आठवें अधिवेशन के प्रथम सत्र में भोजनावकाश के उपरान्त **श्री रमण भाई, श्री रमणीक भाई, श्री शशाङ्क दवे, श्री उपाध्याय जी, श्री जयरामन जी, श्री गोपाल जी अय्यर, श्री वेणीमाधव जी त्रिपाठी** आदि ने उपस्थित शाक्त-साधकों को अपने अमृत-वचनों से लाभान्वित किया। अपने अध्यक्षीय भाषण में वरिष्ठ शाक्त-साधक **श्री अय्यर जी** ने अंग्रेजी मिश्रित जन-भाषा में **यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र** की व्याख्या की। बीच में मधुर भजन चलते रहे।

दूसरे दिन पुनः उसी सभागार में **भगवती के पूजन-अर्चन-आरती** के उपरान्त **गुरु-वन्दना** एवं **स्वागत-गान** के पश्चात् विद्वान वक्ताओं ने अपने अमृत-वचनों से सभागार को गुञ्जित किया। दक्षिण-भारतीय साधक **श्री अय्यर जी** द्वारा रचित पुस्तिका '**वेदिक-व्यू-ऑफ-लाइफ**' का लोकार्पण हुआ तथा **भगवती गायत्री के मन्त्र, मन्त्रार्थ उसकी सर्व-ग्राह्य अनिवार्यता** पर साधकों को विशेष उद्बोधन प्राप्त हुआ।

तदुपरान्त पुनः भोजनावकाश के पश्चात् **श्री सत्येन्द्रकुमार सिन्हा, श्री नाबरिया जी, श्री रावल जी** ने अपने विचार साधकों के समक्ष रखे। इसी क्रम में मूर्धन्य-शाक्ताचार्य **श्री विष्णुपन्त जी उपाध्याय,** ने **श्री श्रीविद्या-नवावरण अर्चन** पर अपना अत्यन्त वैदुष्य-पूर्ण उद्बोधक प्रवचन किया। **श्री गोपाल जी अय्यर** ने भी अपना सार-गर्भित प्रवचन अंग्रेजी में दिया, जिसमें **श्रीविद्या** के सिद्धान्तों एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान का अद्वितीय समन्वय हुआ।

द्वितीय दिवस के सभापति **श्री जयरामन जी** ने अपने विद्वत्ता से ओत-प्रोत प्रवचन में '**श्री ललिता-सहस्त्रनाम**' में उल्लिखित भगवती के कई नामों की व्याख्या करते हुए **परब्रह्म-रूपा श्री श्रीविद्या की साधना की सर्वोच्चता और सर्व-ग्राह्यता** पर प्रकाश डाला तथा उपस्थित शाक्तों को साधकोपयोगी कई निर्देश भी दिए।

सम्मेलन का वातावरण ऐसा भाव-पूर्ण हो गया कि मुख्य अतिथि **श्री ऋतशील शर्मा जी** पुनः अपने भावोद्रेक को न रोक सके और सञ्चालक महोदय की अनुमति लेकर अपने विचारों को व्यक्त करने लगे। **शर्मा जी** ने **सम्मेलन** को सफल बताते हुए **गुजरात** एवं **महाराष्ट्र** की **प्राचीन शाक्त परम्पराओं** के उद्घाटन एवं **श्री गणपतराम दवे, श्री अयङ्गर जी** एवं **शिव-स्वरूप गुप्तावतार बाबाश्री** की वाणी को जन-जन तक पहुँचाने के लिए उपस्थित शाक्त-समाज का आह्वान किया तथा **मुम्बई-शाक्त-सम्मेलन** के कार्य-कर्त्ताओं के सेवा-भाव एवं विनम्रता की हृदय से प्रशंसा की '**भारत माता**' **की वन्दना** एवं **जय-घोष** के साथ ही कार्य-क्रम पूर्ण हुआ।

–'**कुल-वाणी-रत्न**' **पं० महेन्द्र मिश्र, प्रयाग**

सूचना : '**चण्डी**' पुस्तक-माला के द्वारा प्रकाशित **श्री श्रीविद्या-साधना, पुष्प (६)** जुलाई, २०११ में भेजा जाएगा।

'कौल-कल्पतरु' चण्डी की विशेष प्रस्तुति

वर्ष-७० (४)

श्री कमला-कल्पतरु

पुष्प-३

'श्री-सूक्त' -विधान एवं प्रयोग

प्रेरणा-स्तम्भ

प्रातः-स्मरणीय 'कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल

सम्पादक

ऋतशील शर्मा

★

प्रकाशक

पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक

परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ९४५०२२२७६७

Website : www.paravani.org Email : chandi_dham@rediffmail.com

अनुदान ४०/-

प्रकाशक
पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक
परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ९४५०२२२७६७

श्रीलक्ष्मी-स्तव

देवी श्रीमहा-लक्ष्मी

जय रमे!, जय हरि-प्रिये!।
जय सिन्धुजे!, जय सम्पदे!।
जय-जगत-त्रय-ताप-मोचनि!,
कलुष-नाशिनि!, कीर्तिदे!।।

'कौल-कल्पतरु' शुक्ल जी

जय चतुर्भुज-ध्यान-धारिणि!,
विभव-स्वामिनि!, सुख-प्रदे!।
जगत-जननि!, हे क्लेश-हरणि!,
जयति, जय हे मुक्तिदे!।।

❁

निज दया का एक कण,
दुःख-हरण दे जगदम्बिके!।
क्लेश जो काटे वही,
आचरण दे जगदम्बिके!।।

तृतीय संस्करण
श्रावण शुक्ला पञ्चमी, क्रोधी सं० २०६८ वि०-०४ अगस्त, २०११
सर्वाधिकार सुरक्षित
परा-वाणी प्रेस, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज (उ०प्र०)

अनक्रम

मातः नमामि कमले!, पद्माऽऽयतं सु - लोचने!।
श्री विष्णु-हृत् - कमलस्थे!, विश्व-मातः नमोऽस्तु ते।।
क्षीर - सागर - सत्पुत्रि!, पद्म - गर्भाभ - सुन्दरि!।
लक्ष्मि! प्रसीद सततं, विश्व-मातः नमोऽस्तु ते।।

३३. भारत में श्री लक्ष्मी की पूजा..... १४९
३४. शास्त्रों में लक्ष्मी जी..... १५१
३५. श्री और विष्णु की एक-रूपता तथा सर्व-मयता..... १५३
३६. लक्ष्मी की नौ कलाएँ..... १५६
३७. श्रीमहा-लक्ष्मी की कृपा-प्राप्ति के प्रयोग..... १५७
३८. भगवती लक्ष्मी की कृपा-दायक एक सिद्ध स्तोत्र..... १५९
३९. देवी लक्ष्मी की कृपा-पात्रता..... १६२
४०. पालक एवं स्थिति की शक्ति लक्ष्मी देवी..... १६३
४१. श्रीलक्ष्मी-स्तोत्र-त्रयी..... १६५
४२. श्रीमहा-लक्ष्मी-अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्र..... १६९
४३. भगवती महा-लक्ष्मी के विविध ध्यान..... १७२
४४. श्री महा-लक्ष्मी-नामावली-साधना..... १७५
४५. ऋग्-वेदोक्त 'श्री-सूक्त'..... १७९
४६. 'श्री-सूक्त'-विधान..... १८१
४७. 'श्री-सूक्त' के प्रयोग..... १९२
४८. 'श्री-सूक्त' से सम्पुटित 'सप्तशती-पाठ'..... २०१
४९. दारिद्र्य-दहन-विधि..... २०२

★ ★ ★

प्राक्कथन

जगत के त्रि-तापों को मोचन करनेवाली भगवती महा-लक्ष्मी

श्रीविष्णु - हृत् - कमलस्थे!।
विश्व - मातः नमोऽस्तु ते।।

भगवती महा-लक्ष्मी–संसार की **सृष्टि, स्थिति** एवं **संहार** का आदि कारण और मूलाधार हैं। आपके कारण सम्पूर्ण विश्व अर्थात् ब्रह्माण्ड **सृष्टि-स्थिति-नाश-रूपी भ्रमण** में प्रवृत्त होता है। इस सम्बन्ध में '**श्रीकालिका-पुराण**' में एक रोचक कथा का उल्लेख हुआ है। उस '**कथा**' के अनुसार **भगवान् विष्णु** किसी समय **गरुड़** पर आरूढ़ होकर '**आकाश**'-मार्ग से जा रहे थे। नीचे '**नीलाचल-वासिनी**'–'**काम-रूप**' देश में **कामाख्या देवी** थीं, उनको प्रणाम न कर आगे चले, तो **देवी के कोप** से समुद्र में जा गिरे और वहीं भ्रमण करने लगे। कुछ समय के बाद जब **लक्ष्मी जी** को, जो उनका अन्वेषण कर रही थीं, **नारद जी** के मुख से यह बात ज्ञात हुई, तब वे स्वयं **कामाख्या देवी** के पास गईं और '**तप**' से उन्हें प्रसन्न कर **भगवान् विष्णु** को भ्रमण से मुक्त कराया।

उक्त कथा से स्पष्ट होता है कि संसार में एक ओर **भगवती लक्ष्मी** के कारण प्राणी '**सृष्टि-स्थिति-नाश**'-रूपी **यातायात** में प्रवृत्त होता है, तो वहीं उनकी कृपा से–उनके द्वारा प्राप्त '**तत्त्व-ज्ञान**' से, उक्त यातायात से **मुक्त** भी होता है। यही कारण है कि '**आगम**'–**लक्ष्मी देवी** को सभी महा-विद्या की आधार-स्वरूपा **दसवीं महा-विद्या कमला** के रूप में वर्णित करता है।

ऐसी महिमा-मयी **भगवती महा-लक्ष्मी की आराधना** हेतु '**चण्डी**' **आध्यात्मिक पुस्तक-माला** के द्वारा यहाँ **श्रीकमला-कल्पतरु, पुष्प-३** का प्रकाशन हो रहा है। आशा है कि श्रद्धालु बन्धुओं को यह संग्रह भी उपयोगी सिद्ध होगा।

प्रस्तुत **श्रीकमला-कल्पतरु, पुष्प-३** में कुछ समय से अप्राप्त **१. श्री-सूक्त-विधान, २. श्री-सूक्त के प्रयोग** एवं **३. दारिद्र्य-दहन-विधि** को पुनः प्रकाशित कर रहे हैं। इसके लिए **प्रातः-स्मरणीय पण्डित कृष्णानन्द जी मिश्र** '**वैद्य**' एवं पूज्य **कापालिक उद्बोधनानन्दनाथ** जी के श्री-चरणों में '**नमो नमः**'। साथ ही, छत्तीसगढ़ शाक्त-सम्मेलन के अध्यक्ष पं० मधुसूदनप्रसाद शुक्ल को हृदय से धन्यवाद।

–ऋतशील शर्मा
श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग

श्रावण शुक्ला पञ्चमी, सं०-२०६८ वि०
गुरुवार, ०४ अगस्त २०११

★ ★ ★

भारत में श्रीलक्ष्मी की पूजा

प्राचीन काल से भारत में **श्रीलक्ष्मी** की पूजा हो रही है, इसका स्पष्ट प्रमाण है **ऋग्-वेद** के **मण्डल पाँच** के खिल भाग में प्राप्त होनेवाला '**श्री-सूक्त**'। यह **सूक्त** आज भी लोक-प्रिय है। **संहिता-साहित्य** में इसकी विशेष रूप से चर्चा हुई है। अनेक विद्वानों ने इस पर स्वतन्त्र भाष्यों की रचना भी की है।

आज प्रचलित '**श्री-सूक्त**' में १६ मन्त्र हैं। इन सोलह मन्त्रों में कुछ मन्त्र **लक्ष्मी-परक** हैं तथा कुछ **श्री-परक**। किन्तु उन सबको एक साथ पढ़ने पर यही निष्कर्ष निकलता है कि '**श्री**' और '**लक्ष्मी**' में कोई भेद नहीं है। **ऐश्वर्य** का प्रतीक मानकर **लक्ष्मी** और **कीर्ति, पुष्टि** का प्रतीक मानकर **श्री** का वर्णन '**श्री-सूक्त**' में हुआ है। उसमें स्पष्ट रूप से यह कहा गया है कि **समृद्धि, सम्पत्ति, आयु, आरोग्य, पुत्र-पौत्रादि परिवार, धन-धान्य** की विपुलता आदि की प्राप्ति के लिए श्री एवं लक्ष्मी की पूजा की जाती है।

श्रीलक्ष्मी के स्वरूप और गुणों का प्रति-पादन करनेवाले कई नाम '**श्री-सूक्त**' में मिलते हैं। इनमें से उल्लेखनीय हैं–**अश्व-पूर्वा, आर्द्रा, करीषिणी, चन्द्रा, देव-जुष्टा, पद्म-मालिनी, पद्म-वर्णा, चन्द्रा, कीर्ति, पुष्करिणी, यष्करिणी, सूर्या, हिरण्यमयी, हेम-मालिनी** आदि।

श्री-सूक्त में प्रार्थना की गई है कि **सुवर्ण, गाएँ, अश्व** और **नौकर-चाकर आदि परिवार** से युक्त **लक्ष्मी** मुझे प्राप्त हो। **धन-धान्य** इत्यादि सांसारिक सम्पत्ति ही नहीं, वरन् **सैन्य-सम्पत्ति** का भी **लक्ष्मी** में ही समावेश किया गया है और प्रार्थना की गई है कि **अश्व, रथ, गज** इत्यादि से सु-सज्जित सैन्य का रूप धारण करनेवाली **लक्ष्मी** मुझे प्राप्त हो एवं उसका चिरन्तन निवास मेरे घर में हो–

अश्व - पूर्वा रथ - मध्यां, हस्ति - नाद - प्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये, श्रीर्मा देवी जुषताम्।।

श्री-सूक्त में **लक्ष्मी** का सम्बन्ध **सुवर्ण** और **उर्वरता** आदि से किया गया है। इसके साथ ही **लक्ष्मी देवी** का उल्लेख **आर्द्रा, नित्य-पुष्टा, करीषिणी** या **गोबर-युक्ता, कर्दमा, पुष्करिणी** और **ज्वलन्ती** आदि रूपों में भी किया गया है। **कमल** से भी **लक्ष्मी देवी** का सम्बन्ध बताया गया है और इन्हें **हाथियों की आवाज से आनन्दित होनेवाली** भी कहा गया है। **श्री** से इस प्रकार की प्रार्थना की गई है कि वह **अन्न** एवं **पशु** द्वारा आकर घर में निवास करे। उसे ऐसे रथ पर आरूढ़ बताया गया है, जो **सुवर्ण** का है, जिसके आगे **अश्व** जुते हैं, जिसके दोनों ओर **गज** चिङ्घाड़ रहे हैं। **श्री** की प्रसन्नता **गन्ध** के अर्पण से होती है, यह भी कहा गया है।

'**श्री-सूक्त**' के **विनियोग** के अनुसार **श्री-सूक्त** के मन्त्रों के ऋषि हैं–**कर्दम, चिक्लीन, श्रीद** और **आनन्द**। इससे यह ज्ञात होता है कि ये **ऋषि** ही **श्री** व **लक्ष्मी** की उपासना के प्रवर्तक थे।

'श्री-सूक्त' से यह भी भली-भाँति स्पष्ट होता है कि 'श्री' और 'लक्ष्मी' में कोई अन्तर नहीं है। दोनों शब्द एक ही देवी के नाम हैं। पौराणिक काल में श्रीलक्ष्मी के जो विविध रूप और नाम मिलते हैं, उनका मूल स्रोत 'श्री-सूक्त' ही है। इसी के अनुरूप हमें लक्ष्मी का गायत्री मन्त्र भी मिलता है। यथा–

महा-लक्ष्म्यै च विद्महे विष्णु-पत्न्यै च धीमहि, तन्नो लक्ष्मी: प्रचोदयात्।।

'श्री-सूक्त' का रचना-काल विवादास्पद है। कुछ विद्वान् इसे उत्तर-वैदिक काल की रचना मानते हैं। वैदिक परम्परा के 'बृहद्-देवता' नामक ग्रन्थ में 'श्री-सूक्त' का इस प्रकार उल्लेख हुआ है–

श्रीसूक्तमाशीर्वादस्तु, श्रीपुत्राणां पराणि षट्।
तत्स्याद्वा लक्ष्म्युपनुदमग्निस्तत्र नियातभाक्।।

'बृहद्-देवता' का समय पाणिनि के आस-पास माना जाता है। इसलिए ई०पू० चौथी-पाँचवीं शती तक श्रीलक्ष्मी की पूजा का पर्याप्त विकास हो चुका होगा और दोनों देवियों (श्री और लक्ष्मी) का समन्वय भी स्वीकार कर लिया गया होगा।

ऐसा लगता है कि उत्तर-वैदिक काल तक 'श्री' एक देवी का रूप ग्रहण कर चुकी थीं! उत्तर-वैदिक काल के साहित्य में 'श्री' की चर्चा अनेक प्रकार के सुख देनेवाली देवी के रूप में है। 'यजुर्वेद वाजसनेयि संहिता' में 'श्री' और 'लक्ष्मी' को पुरुष-प्रजापति की पत्नियाँ माना गया है।(३१-३२)।

आधुनिक विचारकों का मत है कि 'लक्ष्मी'-शब्द का प्रयोग मूलत: चिह्न-लक्षण या शुभ-लक्षण के रूप में होता था और सम्भवत: इसी प्रकार लक्ष्मी को शुभ-लक्षण या सौभाग्य की देवी माना जाने लगा। अकल्याणकारी देवी के रूप में 'अलक्ष्मी' का भी वर्णन मिलता है। इस दृष्टि से एक महत्त्व-पूर्ण उल्लेख अथर्व-वेद में है। वहाँ एक मन्त्र में कहा गया है कि प्रत्येक मनुष्य का जन्म होने के साथ एक सौ एक लक्ष्मियाँ भी पैदा होती हैं, जिनमें कुछ अकल्याणकारी, कुछ कल्याणकारी होती हैं–

एक-शतं लक्ष्मयो मर्त्यस्य साकं तन्वा जनुषोधि जाता:।

फिर आगे कहा गया है कि जो पुण्य-मयी पवित्र लक्ष्मियाँ मेरे स्वभाव को दरशानेवाली उत्तम प्रवृत्तियाँ हैं, वे मेरे जीवन में बार-बार प्रकट हों और जो पाप-जनक बुरी प्रवृत्तियाँ हैं, उन्हें मैं अपने में से निकालकर दूर कर दूँ–

तासां पापिष्ठा निरित: प्र हिण्म: शिवा अस्मभ्यं जातवेदो नियच्छ।।

अथर्व-वेद में ऋत, सत्य, बल, वीर्य आदि से लक्ष्मी की एकता स्थापित की गई है–

ऋतं सत्यं तपो राष्ट्रं, श्रमो धर्मश्च कर्म च।
भूतं भविष्यदुच्छिष्टे वीर्यं लक्ष्मीर्बलं बले।।

–श्री जैनेन्द्र वात्स्यायन

***

शास्त्रों में लक्ष्मी जी

लक्ष्मी जी–सुवर्ण-वर्णा, परम-कान्तिमती और अतिशय सुन्दरी हैं। वे स्मित-वदना, कमलानना और कमल-दल-नयना हैं। श्रीनारायण का सा पीताम्बर उनको प्रिय है (श्रीमद्-भागवत ८, ८, १५)–

'समुद्रः पीत-कौशेय-वाससी समुपाहरत्।'

वे चतुर्भुजा हैं। प्रथम कर-युगल में कमल-युगल (दो कमल) लिए हुए हैं। द्वितीय दक्षिण-पाणि (दाहिने हाथ) से अभय और वाम-पाणि (बाँएँ हाथ) से वर दे रही हैं। वे किरीट, कुण्डल, केयूर, कटक, ग्रैवेय, हेम-हार, कमल-माला, काञ्ची, नूपुर आदि विभूषणों से विभूषिता हैं। वे कमलासन पर विराजमान हैं और स्यन्दन उनका प्रिय यान है। वे दया-मयी, उदार, यशस्विनी, देव-जुष्टा, सर्व-लोकेश्वरी, दुराधर्षा और त्रिभुवन-वैभव-कारिणी हैं। माधवी, माधव-प्रिया, हरि-वल्लभा, विष्णु-पत्नी, विष्णु-प्रिय-सखी, रमा, इन्दिरा आदि श्रीलक्ष्मी के नामान्तर हैं। धन-धान्य, गाय-घोड़े, पुत्र-कलत्र, बन्धु-बान्धव, दास-दासी, आरोग्य और शतायुष्य आदि कामनाओं को वे पूर्ण करनेवाली हैं एवं अपने वात्सल्य-मय पतित-पावन अवलोकन से चरणाश्रितों को नारायण के पद-पद्मों की आराधना में अग्रसर करनेवाली हैं।

सेवित और शक्तिमान् का अभेद है; अतएव लक्ष्मी जी और विष्णु भगवान् एक ही हैं। विष्णु से श्री भिन्न नहीं हैं। वे भगवान् से कभी वियुक्त नहीं हैं। विष्णु सर्व-व्यापक हैं और उनकी शक्ति जगन्माता श्री भी सर्व-व्यापिका हैं, (देखिए, विष्णु-पुराण)–

नित्यैव सा जगन्माता, विष्णोः श्रीरनपायिनी।
यथा सर्व - गतो विष्णुस्तथैवेयं द्विजोत्तम।।

अवतार-रूप में भी भगवान् की सहायिका श्री होती हैं। राम-रूप में वही सीता हैं और कृष्ण-रूप में वही रुक्मिणी हैं। जब भगवान् देवताओं में अवतीर्ण होते हैं, तब श्री भी देवी-रूप धारण कर लेती हैं और जब भगवान् मनुष्य-लोक में मानवाकृति धारण करते हैं, तब श्री भी मानवाकृति-मती बन जाती हैं, (विष्णु-पुराण, १, ९, १४२-४)–

एवं यदा जगत् - स्वामी, देव - देवो जनार्दनः।
अवतारं करोत्येष, तदा श्रीस्तत् – सहायिनी।।
राघवत्वेऽभवत्सीता, रुक्मिणी कृष्ण - जन्मनि।।

श्री और श्रीमान्–अभिन्न और एक-तत्त्व होने पर भी भक्तों पर अनुग्रह करनेवाले विग्रह के रूप में भिन्न-वत् प्रतीत होते हैं। लक्ष्मी-नारायण, सीता-राम, राधा-कृष्ण आदि रूप पर-तत्त्व के ही लीला-निमित्तक दो-दो रूप हैं; किन्तु युगल रूप में अनन्यता है।

प्रभा एवं प्रभा-घन सूर्य जिस प्रकार अनन्य और अभिन्न हैं, उसी प्रकार लक्ष्मी और नारायण अनन्य और अभिन्न हैं। जिस प्रकार तरङ्ग-राशि समुद्र से अनन्य और अभिन्न है, उसी प्रकार लक्ष्मी जी नारायण से अनन्य और अभिन्न हैं।(देखिए, जयाख्य-संहिता, ६/७८)-

सूर्यस्य रश्मयो यद्वदूर्मयश्चाम्बुधेरिव।
सर्वैश्वर्य - प्रभावेण, कमला श्रीपतेस्तथा।।

ज्योत्स्ना का निवास जिस प्रकार राकेश में है, उसी प्रकार श्री का निवास योगियों के ध्यानास्पद भगवद्-वपु में है (देखिए, अग्नि-पुराण २३७/६)-

का त्वदन्या त्वामृते देवि!, सर्व-यज्ञ-मयं वपुः।
अध्यास्ते देव-देवस्य, योगि-चिन्त्यं गदा-भृतः।।

जब श्री और विष्णु विभिन्न रूपों में व्यक्त होते हैं, तब श्री तो वात्सल्य-मूर्ति अम्बा हैं और विष्णु भगवान् जगत्-पिता हैं। (देखिए, अग्नि-पुराण, २३७-२०)-

त्वमम्बा सर्व-भूतानां, देव-देवो हरिः पिता।

-वेदान्ताचार्य डा० कृष्णदत्त भारद्वाज शास्त्री

भगवती लक्ष्मी

'यजुर्वेद' में भगवती लक्ष्मी का उल्लेख भगवान् नारायण की सह-धर्मिणी के रूप में इस प्रकार उपलब्ध होता है-'श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे०' अर्थात् हे परमेश्वर आपकी दो पत्नियाँ हैं, श्री शोभा (प्रकृति-रूपा) तथा लक्ष्मी-धन, सम्पद्-रूपा।

दो पत्नियों की बात कई जगह आई है। 'गीता' में भगवान् श्री कृष्ण ने स्वयं अपने श्री-मुख से कहा है-'प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय, सम्भावाम्यात्म-मायया' अर्थात् मैं जब भी अवतरित होता हूँ, अपनी दो शक्तियों (सह-धर्मिणियों) के साथ अवतरित होता हूँ, १. प्रकृति और २. माया।

'श्रीमद्-भागवत' में परमेश्वर के हास को ही माया बताया गया है-'हासो जनोन्मादकरी च माया'। वहाँ भी यह कहा गया है कि भगवान् श्री मन्नारायण वेङ्कटेश अथवा बाला जी के वक्ष पर-१. भू-देवी (वसुन्धरा-सभी धातुओं, रत्नों की धारयित्री) तथा २. पद्मावती या श्री (शोभा) देवी दो सह-धर्मिणी विराजमान हैं।

'अथर्व-वेदीय सीतोपनिषद्' में भगवती सीता को ही लक्ष्मी बताया गया है।

'वाल्मीक रामायण' के 'सुन्दर-काण्ड' के सर्ग २७ में भी त्रिजटा के स्वप्न में भगवान् श्री राम को ब्रह्मादि से वन्दित विष्णु-रूप में तथा उनकी सह-धर्मिणी सीता को लक्ष्मी बताया गया है।

श्री और विष्णु की एक-रूपता तथा सर्व-मयता

।।श्री पाराशर उवाच।।

नित्यैवैषा जगन्माता, विष्णोः श्रीरनपायिनी।
यथा सर्व - गतो विष्णुस्तथैवेयं द्विजोत्तम!।।१
अर्थो विष्णुरियं वाणी, नीतिरेषा नयो हरिः।
बोधो विष्णुरियं बुद्धिर्धर्मोऽसौ सत्क्रिया त्वियम्।।२
स्रष्टा विष्णुरियं सृष्टिः, श्रीर्भूमिर्भूधरो हरिः।
सन्तोषो भगवाँल्लक्ष्मीस्तुष्टिर्मैत्रेय! शाश्वती।।३
इच्छा श्रीर्भगवान् कामो, यज्ञोऽसौ दक्षिणा त्वियम्।
आज्याहुतिरसौ देवी, पुरोडाशो जनार्दनः।।४
पत्नि-शाला मुने! लक्ष्मीः, प्राग्वंशो मधु-सूदनः।
चितिर्लक्ष्मीर्हरिर्यूप, इध्मा श्रीर्भगवान् कुशः।।५
साम - स्वरूपी भगवानुद्गीति कमलालया।
स्वाहा लक्ष्मीर्जगन्नाथो, वासुदेवो हुताशनः।।६
शङ्करो भगवाञ्छौरिर्गौरी लक्ष्मीर्द्विजोत्तम!
मैत्रेय! केशवः सूर्यस्तत्प्रभा कमलालया।।७
विष्णुः पितृ - गणः पद्मा, स्वधा शाश्वत - पुष्टिदा।
द्यौः श्रीः सर्वात्मको विष्णुरवकाशोऽति - विस्तरः।।८
शशाङ्कः श्रीधरः कान्तिः, श्रीस्तथैवानपायिनी।
धृतिर्लक्ष्मीर्जगच्चेष्टा, वायुः सर्वत्रगो हरिः।।९
जलधिर्द्विज! गोविन्दस्तद् - वेला श्री महा - मुने!।
लक्ष्मी - स्वरूपमिन्द्राणी, देवेन्द्रो मधु - सूदनः।।१०
यमश्चक्र - धरः साक्षाद्, धूमोर्णा कमलालया।
ऋद्धिः श्रीः श्रीधरो देवः, स्वयमेव धनेश्वरः।।११
गौरी लक्ष्मी महा - भाग!, केशवो वरुणः स्वयम्।
श्रीर्देव - सेना विप्रेन्द्र!, देव - सेना - पतिर्हरिः।।१२

अवष्ठम्भो गदा - पाणिः, शक्तिर्लक्ष्मीर्द्विजोत्तम!।
काष्ठा लक्ष्मीर्निमेषोऽसौ, मुहूर्त्तोऽसौ कला त्वियम्।।१३
ज्योत्स्ना लक्ष्मीः प्रदीपोऽसौ, सर्वः सर्वेश्वरो हरिः।
लता - भूता जगन्माता, श्रीविष्णुर्द्रुम - संज्ञितः।।१४
विभावरी श्रीर्दिवसो, देवश्चक्र - गदा - धरः।
वर - प्रदो वरो विष्णुर्वधूः पद्म - वनालया।।१५
नद - स्वरूपी भगवाञ्छ्रीर्नदी - रूप - संस्थिता।
ध्वजश्च पुण्डरीकाक्षः, पताका कमलालया।।१६
तृष्णा लक्ष्मीर्जगन्नाथो, लोभो नारायणः परः।
रती - रागश्च मैत्रेय!, लक्ष्मीर्गोविन्द एव च।।१७
किं चाति - बहुनोक्तेनं, संक्षेपेणेदमुच्यते-
देव - तिर्यङ् - मनुष्यादौ, पुन्नामा भगवान् हरिः।
स्त्री - नाम्नी श्रीश्च विज्ञेया, नानयोर्विद्यते परम्।।१८

(श्री मैत्रेय जी के प्रश्न के उत्तर में) श्री पाराशर जी बोले-हे द्विजोत्तम! भगवान् का कभी साथ न छोड़नेवाली जगज्जननी लक्ष्मी जी नित्य हैं और जिस प्रकार श्रीविष्णु भगवान् सर्व-व्यापक हैं, वैसे ही ये भी हैं।।१

विष्णु अर्थ हैं, तो लक्ष्मी जी वाणी हैं। हरि न्याय, तो लक्ष्मी जी नीति। भगवान् विष्णु बोध हैं, तो ये बुद्धि तथा वे धर्म हैं, तो लक्ष्मी जी सत्क्रिया। भगवान् जगत् के स्रष्टा हैं, तो लक्ष्मी जी सृष्टि। श्रीहरि भूधर हैं, तो लक्ष्मी जी भूमि। भगवान् सन्तोष हैं, तो लक्ष्मी जी नित्य-तुष्टि। भगवान् काम हैं, तो लक्ष्मी जी इच्छा। वे यज्ञ हैं, तो ये दक्षिणा। श्री जनार्दन पुरोडाश हैं, तो देवी लक्ष्मी जी आज्या (घृत की आहुति)।।२-४

हे मुने! मधुसूदन यजमान-गृह हैं, तो लक्ष्मी जी पत्नी-शाला। श्री हरि यूप (यज्ञ-स्तम्भ) हैं, तो लक्ष्मी जी चिति (इष्ट का चयन)। भगवान् कुशा हैं, तो लक्ष्मी जी समिधा। भगवान् साम-स्वरूप हैं, तो कमला देवी उद्गीति। जगत्पति भगवान् वासुदेव अग्नि हैं, तो लक्ष्मी जी स्वाहा।५-६

द्विजोत्तम! भगवान् विष्णु शङ्कर हैं, तो श्री लक्ष्मी जी गौरी। इसी प्रकार हे मैत्रेय! श्री केशव सूर्य हैं, तो कमल-वासिनी श्री लक्ष्मी जी प्रभा। श्री विष्णु पितृ-गण हैं, तो श्री कमला नित्य-पुष्टि-दायिनी स्वधा। विष्णु अति विस्तीर्ण सर्वात्मक आकाश हैं, तो लक्ष्मी जी स्वर्ग-लोक। भगवान् श्रीधर चन्द्रमा हैं, तो लक्ष्मी जी अक्षय कान्ति। श्री हरि सर्वगामी वायु हैं, तो लक्ष्मी जी जगच्चेष्टा (जगत् की गति) और धृति (आधार)।।७-९

हे महा-मुने! श्री गोविन्द समुद्र हैं, तो हे द्विज! लक्ष्मी जी तट-भूमि। भगवान् मधुसूदन देवराज इन्द्र हैं, तो लक्ष्मी इन्द्राणी। चक्र-पाणि भगवान् साक्षात् यम हैं, तो श्री कमला यम-पत्नी-धूमोर्णा।

देवाधिदेव श्री विष्णु स्वयं कुबेर हैं, तो लक्ष्मी जी साक्षात् ऋद्धि। केशव स्वयं वरुण हैं, तो महा-भागा लक्ष्मी जी गौरी। हे द्विजराज! श्री हरि देव-सेनापति स्वामी कार्तिकेय हैं, तो श्री लक्ष्मी जी देव-सेना।। १०-१२

हे द्विजोत्तम! भगवान् गदाधर शक्ति के आधार हैं, तो लक्ष्मी जी शक्ति। भगवान् निमेष, तो लक्ष्मी जी काष्ठा हैं। वे मुहूर्त हैं, तो ये कला। सर्वेश्वर सर्व-रूप श्री हरि दीपक हैं, तो श्री लक्ष्मी जी ज्योति। श्री विष्णु वृक्ष-रूप हैं, तो जगन्माता श्री लक्ष्मी जी लता। चक्र-गदा-धर देव श्री विष्णु दिन हैं, तो लक्ष्मी जी रात्रि। वर-दायक श्री हरि वर हैं, तो पद्म-निवासिनी श्री लक्ष्मी जी वधू। भगवान् नद हैं, तो श्री जी नदी। कमल-नयन भगवान् ध्वजा हैं, तो कमलालया लक्ष्मी जी पताका। जगदीश्वर परमात्मा नारायण लोभ हैं, तो लक्ष्मी जी तृष्णा तथा हे मैत्रेय! रति और राग भी साक्षात् श्री लक्ष्मी और गोविन्द-रूप ही हैं। अधिक क्या कहा जाए, संक्षेप में यह कहना चाहिए कि देव, तिर्यक् और मनुष्य आदि में पुरुष-वाची तत्त्व श्रीहरि हैं और स्त्री-वाची तत्त्व श्री लक्ष्मी जी। इनके परे और कोई नहीं है।। १३-१८

भगवती लक्ष्मी

'शिव पुराण के अनुसार तुलसी (वृन्दा) लक्ष्मी का अवतार हैं। रुक्मिणी (भगवान् श्रीकृष्ण की पत्नी) तथा भगवती सीता को लक्ष्मी का अवतार बताया गया है।

'अमर कोष' में लक्ष्मी का एक नाम 'क्षीर-सागर कन्यका' है। वहीं अन्यत्र इसी अर्थ में 'क्षीरोद्-तनया' नाम से भी उन्हें अभिहित किया गया है। 'ब्रह्मवैवर्त' में यही नाम इस रूप में मिलता है– 'क्षीरोद्-सिन्धु-कन्या'।

'नारद पुराण' के अनुसार जहाँ शिव और विष्णु की पूजा होती है, वहाँ भगवती लक्ष्मी का शाश्वत निवास होता है।

'मत्स्य पुराण' के अनुसार भगवती लक्ष्मी–विष्णु भगवान् की पत्नी हैं। अतः इनकी स्थापना भगवान् विष्णु के वाम भाग में करनी चाहिए।

'देवी भागवत पुराण' में सृष्टि के आदि में श्री कृष्ण के वामाङ्ग से महा-रास के समय लक्ष्मी का प्रादुर्भाव बताया गया है।

'वाल्मीक रामायण' के 'सुन्दर-काण्ड' के सर्ग ७ के १४ वें श्लोक में पुष्पक विमान में चित्रित लक्ष्मी का वर्णन है। वहीं गज-लक्ष्मी के रूप में भी लक्ष्मी जी का वर्णन [illegible]ता है। 'युद्ध काण्ड' में भगवती सीता को लक्ष्मी तथा भगवान् राम को विष्णु के रूप में म[illegible]र्षि वाल्मीक ने वर्णित किया है। वहीं सुन्दर-काण्ड', सर्ग २७ में त्रि-जटा के स्वप्न में श्री रा[illegible]का उल्लेख विष्णु-रूप में हुआ है।

'महा-भारत' में विजय और समृद्धि की प्रदायिनी भगवती लक्ष्मी का उल्लेख पद्मा के रूप में हुआ है।

'नीलमत पुराण' में केशव (श्री कृष्ण) के साथ लक्ष्मी की आराधना का उल्लेख मिलता है।

लक्ष्मी की नौ कलाएँ

■ अन्धे को रास्ता बता देना, लँगड़े को मञ्जिल तक पहुँचा देना, भूखे को रोटी खिला देना, प्यासे को पानी पिला देना, मूर्ख को पढ़ा देना, रोगी को दवा दे देना, दुष्ट को दण्ड देना, भीत को भय से छुड़ा देना, यह '**विभूति**' नाम की लक्ष्मी की पीठिका है। **लक्ष्मी-निवास** की यह पहली शक्ति है। **लक्ष्मी के निवास** का स्थान **विभूति**-हीन नहीं होता।

■ दूसरी शक्ति '**नम्रता**' है। यह छोटे से बड़ा बनाने में बड़ी चतुर है। जब तक मनुष्य को नम्रता से भरा पाइएगा, उसे क्रम से ऊपर की तरफ उठता ही देखिएगा। '**नम्रता**' लक्ष्मी की द्वितीय पीठाधिष्ठात्री देवता है। वह कितना उच्चासन आपको देगी, इसकी थाह नहीं-'**इन्द्रो ब्रह्म-पदं विधिर्हरि-पदम्।**' **नम्रता** सब कुछ दे डालती है।

■ '**विभूति**' और '**नम्रता**'-ये दोनों कलाएँ जिसके पास आ जाती हैं, वह लक्ष्मी की तृतीय कला '**कान्ति**' का पात्र हो जाता है। **लक्ष्मी** की तीन कलाओं की प्रीति होने पर '**तुष्टि**' नामक चतुर्थ कला अपने आप उसमें आ जाती है, वह कभी अपुत्र नहीं होता। संसार मात्र उसका पुत्र बन जाता है। नई विद्या, नई रोशनी, नए-नए व्यापार सभी नए-ही-नए उत्पन्न होने लगते हैं। उसकी वाणी सिद्ध, व्यवहार सिद्ध, अक्षुण्ण गति, सभी उमड़-उमड़ कर नदियों के जल की तरह उस महा-पुरुष समुद्र में आ-आ कर एक-रस हो जाती हैं। ऐसे समय **लक्ष्मी** की '**कीर्ति**' नामक पाँचवीं पीठाधिष्ठात्री सुवर्ण मेरु में ढोल बजा-बजा कर नाचने लगती है।

■ इस मानवीय संसार में क्या पूछना? **स्वर्ग** कीर्तिवानों के लिए स्थान है। **इन्द्र** का पद उसकी आकांक्षा करता है। **इन्द्रद्युम्न** की **कीर्ति** का लोप होने के समय की कथा अपने भारतवर्ष के भीतर गाई गई है। जिसने **कीर्ति की उपासना** में जन्म बिताया, वही पुरुष **लक्ष्मी का साधक** है। पुराने राजा, धनी, विद्वान् सभी प्रधान रूप से '**कीर्ति**' की उपासना करने में और इस देवी के सामने अपने प्राण, धन, प्रिय-जन-सभी का बलिदान करने में हिचकना नहीं जानते थे।

■ **कीर्ति** की साधना से लक्ष्मी की '**सन्नति**' नामक छठी कला लोगों पर मुग्ध होती है। **सन्नति**-प्राप्त पुरुष '**पुष्टि**' नामक लक्ष्मी की सातवीं पीठाधिष्ठात्री का पात्र होता है। इसके बाद आठवीं '**उत्कृष्टि**' नामक कला प्राप्त होती है और उसकी क्षय-वृद्धि का लोप हो जाता है। धीरे-धीरे नवीं '**ऋद्धि**' नाम की पीठाधिष्ठात्री अपने आने को उत्सुक हो जाती है।

■ उक्त **नौ पीठों, नौ कलाओं** से हीन पुरुष के पास **लक्ष्मी** सहसा नहीं आती। उक्त नौ पीठिकाओं का आधार एक '**दया**' है, जो कि हर एक पुरुष के हृदय में विराजती है। **दया** से साधक दानी होता है और उसके घर में उक्त नौ सखियों के साथ स्वयं **महा-लक्ष्मी** विराजमान होने में सकुचाती नहीं।

■ **दया** का साधन कठिन है, जिसके गर्भ में **महा-लक्ष्मी** और **विष्णु-पद** विराजमान हैं। इसके लिए संसार में घोर-तर परिश्रम करने पड़ते हैं। **मन्त्र-शास्त्र** इसी के न होने से दूर भागता है। परिश्रमी पुरुष को प्राण हथेली में रखना पड़ता है। जो आपत्ति झेलने में, कष्टों को भोगने में सहनशील नहीं, उस पर **भगवती** प्रसन्न नहीं होती।

-'कुल-ज्योति' पण्डित कन्हैयालाल दीक्षित

श्रीमहा-लक्ष्मी की कृपा-प्राप्ति के प्रयोग

(१) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्म्यै कमल-धारिण्यै गरुड-वाहिन्यै श्रीं ह्रीं ऐं स्वाहा।

उक्त मन्त्र को **१०८ बार नित्य** जपे। प्रति **शुक्रवार** को **व्रत** रखे अर्थात् निराहार रहे या मात्र फल, दूध आदि ही ले। **लक्ष्मी-यन्त्र** की पूजा करे और **चाँदी की थाली** अथवा **फूल की थाली** में **सवा पाव चावल** श्वेत वस्त्र पर बिछाकर उस पर **गरी का एक गोला** शुद्ध जल से धोकर रख दे। उस गोले के ऊपर **श्वेत चन्दन** से '**श्रीं**' बीज लिखकर गोले की **पञ्चोपचार से पूजा** करे। **सफेद फूल** चढ़ाए, **सफेद पदार्थ, ऋतु-फल** का भोग लगाए। **नमक** न खाए। **चावल, वस्त्र, गोलादि** पूजा की समस्त सामग्री किसी **शुभ समय, सोमवती** हो या ग्रहणादि पुण्य-काल में, किसी **सदाचारी ब्राह्मण** को दान कर दे।

महा-लक्ष्मी-स्तोत्र का नित्य आठ अथवा छः पाठ अवश्य करे। **शुक्ल-पक्ष** में अपने **शुभ चन्द्रमा**, अच्छे घड़ी-मुहूर्त में, **शुक्रवार पुष्य नक्षत्र** अथवा **हस्त, अश्विनी, रेवती, आर्द्रा** आदि शुभ नक्षत्रों में यह प्रयोग प्रारम्भ करे। **लक्ष्मी जी की चतुर्भुजी मूर्ति** अथवा चित्रपट हो, विधि-पूर्वक यन्त्र में मन्त्र से पूजन कर **श्रीगुरु से आज्ञा** लेकर अनुष्ठान करे। **श्री-सूक्त** या **लक्ष्मी-सूक्त** के तीन पाठ कर भाग्य-शुद्धि सर्व-प्रथम कर ले। जब तक पाठ करे, **घी का दीपक** अवश्य जलाए। **श्वेत वस्त्र** धारण करे, **श्वेत आसन** पर बैठे, **श्वेत रेशम की माला से जप** करे। अन्त में **हवन-स्तुति** कर **लक्ष्मी जी का विसर्जन** करे।

इस प्रकार **एक वर्ष** पर्यन्त पूजा करे, तो मन-वांछित लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। रोजगार-व्यापार न लगता हो, तो तत्काल लग जाता है।

(२) **श्री-सूक्त** से अथवा **लक्ष्मी जी के मूल-मन्त्र** से किसी **देव-मन्दिर** या **तुलसी-वन** में प्रति-दिन निश्चित समय पर **भगवती कमला की पूजा** किया करे, तो पूजन करनेवाला, धन-वैभव से सम्पन्न होता है।

(३) **बेल की लकड़ी** के ८ अंगुल चौड़े, १० अंगुल लम्बे पीढ़े में-"**ॐ श्रीं महा-लक्ष्म्यै स्वाहा**" मन्त्र-गर्भित **षट्-कोण** में **श्रीलक्ष्मी की पूजा** कर **हल्दी की माला** से उक्त मन्त्र के प्रति-दिन **१०८ बार जप** के पश्चात् **पञ्जर-स्तोत्र** के तीन पाठ नित्य एवं **शुक्रवार** को सोलह पाठ करे तथा **पञ्जर के मन्त्रों से घी-शक्कर-मेवा** से **१०८ आहुतियाँ ४८ दिन तक दे**, तो इच्छित धन की प्राप्ति होती है।

(४) '**ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं आं अमुकं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।**

उक्त मन्त्र का विधि-पूर्वक **सवा लक्ष** जप करने से अभीष्ट-सिद्धि होती है।

(५) यह प्रयोग उन व्यक्तियों के लिए है, जो धनी हैं, किन्तु इतने नहीं कि अपनी इच्छानुसार संसार में गौरव-पूर्वक जीवन-यापन कर सकें। ऐसे बन्धु प्रारम्भ में स्वर्णादि का व्यय सहज ही कर सकते हैं।

भगवती लक्ष्मी की सोने की मूर्ति बनवाकर उस मूर्ति का पूजन हल्दी और सुवर्ण-चाँदी के कमल-पुष्पों से करे। फिर सधवा स्त्री और गाय का पूजन कर पूर्णिमा के चन्द्र में अथवा पानी से भरे हुए कुम्भ में भगवती महा-लक्ष्मी का ध्यान कर कमल-पत्र के आसन पर बैठकर सोने की माला से श्री-सूक्त की निम्न ऋचा में बीज-त्रय (श्रीं ह्रीं क्लीं) जोड़ कर प्रातः, मध्याह्न और सायं एक-एक हजार (दश-दश माला) बार जप करे। इस प्रकार एक लाख पचीस हजार जप कर मधु और कमल-पुष्प से दशांश होम करे। फिर तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण-भोजन सविधि करे। जप से पूर्व सङ्कल्प करे। फिर कर-न्यासादि करे। यथा–

कर-न्यास–ॐ नमो भगवत्यै महा-लक्ष्म्यै हिरण्य-वर्णायै अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ नमो भगवत्यै महा-लक्ष्म्यै हरिण्यै तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ नमो भगवत्यै महा-लक्ष्म्यै सुवर्ण-रजत-स्त्रजायै मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ नमो भगवत्यै महा-लक्ष्म्यै चन्द्रायै अनामिकाभ्यां हुम्। ॐ नमो भगवत्यै महा-लक्ष्म्यै हिरण्मय्यै कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐ नमो भगवत्यै महा-लक्ष्म्यै लक्ष्म्यै करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्।

अङ्ग-न्यास–ॐ नमो भगवत्यै महा-लक्ष्म्यै हिरण्य-वर्णायै हृदयाय नमः। ॐ नमो भगवत्यै महा-लक्ष्म्यै हरिण्यै शिरसे स्वाहा। ॐ नमो भगवत्यै महा-लक्ष्म्यै सुवर्ण-रजत-स्त्रजायै शिखायै वषट्। ॐ नमो भगवत्यै महा-लक्ष्म्यै चन्द्रायै कवचाय हुम्। ॐ नमो भगवत्यै महा-लक्ष्म्यै हिरण्मय्यै नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ नमो भगवत्यै महा-लक्ष्म्यै लक्ष्म्यै अस्त्राय फट्।

।।ध्यान।।

विद्युद्-दाम-सम-प्रभां हिम-गिरि-प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः।
शुण्डा-दण्ड - समुद्धृतामृतघटैरासिञ्च्यमानां रमाम्।।
विभ्राणां कर - पङ्कजैर्जप - वटीं पद्म – द्वयं पुस्तकम्।
भास्वद्-रत्न-समुज्ज्वलां कुच-नतां ध्यायेज्जगत्-स्वामिनीम्।।

।।ऋचा।।

श्रीं ह्रीं क्लीं हिरण्य-वर्णां हरिणी सुवर्ण-रजत-स्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जातवेदो म आवह।।

यह प्रयोग ३२ लाख का है। पहले सवा लाख का जप, होम आदि करे। फिर दूसरे सवा लाख का प्रारम्भ करे। इस प्रकार ३२ लाख का प्रयोग पूर्ण करे। पहिले प्रयोग से लाभ होने लगेगा।

***

भगवती लक्ष्मी की कृपा-दायक एक सिद्ध स्तोत्र

विष्णु-पुराण में भगवती लक्ष्मी के प्रति देव-राज इन्द्र द्वारा की गई एक स्तुति है। इस स्तुति का बड़ा माहात्म्य है। इसके प्रयोग से निश्चित रूप से धन-धान्यादि वैभव की प्राप्ति होती है। अनेक लोगों द्वारा अनुभूत यह स्तोत्र यहाँ दिया जा रहा है।

'**प्रयोग-विधि**' यह है कि एक छोटी-सी तश्तरी में चन्दन से '**अष्ट-दल कमल**' अङ्कित करे। उस पर '**दीपक**' स्थापित कर '**दीप-शिखा**' में **भगवती लक्ष्मी** का '**आवाहन**' भावना से करे। फिर उनका **पञ्चोपचारों से पूजन** कर '**सङ्कल्प**'-पूर्वक एकाग्र-चित्त से निम्न स्तोत्र का **भक्ति-पूर्वक पाठ** करे।

एक लाख आवृत्ति से इसका '**पुरश्चरण**' पूर्ण होता है। परिवार के सभी व्यक्तियों में से प्रत्येक व्यक्ति प्रति-दिन सहयोग-पूर्वक इस स्त्रोत्र का **सोलह-सोलह बार पाठ करें, तो छः** महीने के भीतर **भगवती लक्ष्मी की कृषा-प्राप्ति** का चमत्कार देखने को मिल सकता है। '**स्तोत्र**' इस प्रकार है–

।।पराशर उवाच।।

सिंहासन - गतः शक्रः, सम्प्राप्य त्रि - दिवं पुनः।
देव - राज्ये स्थितो देवीं, तुष्टावाब्ज - करां ततः।।

।।इन्द्र उवाच।।

नमस्ते सर्व - भूतानां, जननीमब्धि - सम्भवाम्।
श्रियमुन्निद्र-पद्माक्षीं, विष्णु-वक्षः-स्थल-स्थिताम्।।
पद्मालयां पद्म - करां, पद्म - पत्र - निभेक्षणाम्।
वन्दे पद्म - मुखीं देवीं, पद्म - नाभ - प्रियामहम्।।
त्वं सिद्धिस्त्वं स्वधा स्वाहा, सुधा त्वं लोक-पावनी।
सन्ध्या रात्रिः प्रभा भूतिर्मेधा श्रद्धा सरस्वती।।
यज्ञ - विद्या महा - विद्या, गुह्य - विद्या च शोभने!
आत्म-विद्या च देवि! त्वं, विमुक्ति-फल-दायिनी।।
आन्विक्षिकी त्रयी वार्ता, दण्ड-नीतिस्त्वमेव च।
सौम्यासौम्यैर्जगद् - रूपैस्त्वयैतद् देवि! पूरितम्।।
का त्वदन्या त्वामृते देवि!, सर्व - यज्ञ - मयं वपुः।
अध्यास्ते देव - देवस्य, योगि - चिन्त्यं गदा - भृतः।।

त्वया देवि! परित्यक्तं, सकलं भुवन - त्रयम्।
विनष्ट - प्रायमभवत्, त्वयेदानीं समेधितम्।।
दाराः पुत्रास्तथाऽऽगार - सुहृद्धान्य - धनादिकम्।
भक्त्येतन्महा - भागे!, नित्यं त्वद् - वीक्षणान्नृणाम्।।
शरीरारोग्यमैश्वर्यमरि - पक्ष - क्षयः सुखम्।
देवि! त्वद्-दृष्टि-दृष्टानां, पुरुषाणां न दुर्लभम्।।
त्वमम्बा सर्व - भूतानां, देव - देवो हरिः पिता।
त्वयैतद् विष्णुना चाम्ब!, जगद् व्याप्तं चराचरम्।।
मा नः कोशं तथा गोष्ठं, मा गृहं मा परिच्छदम्।
मा शरीरं कलत्रं च, त्यजे सर्वथा पावनि!।।
मा पुत्रान् मा सुहृद्-वर्गान्, मा पशून् मा विभूषणम्।
त्यजेथा मम देवस्य, विष्णोर्वक्षः - स्थलाश्रये!।।
सत्त्वेन सत्य - शौचाभ्यां, तथा शीलादिभिर्गुणैः।
त्यज्यन्ते ते नराः सद्यः, सन्त्यक्ता ये त्वयाऽमले!।।
त्वयाऽवलोकिताः सद्यः, शीलाद्यैरखिलैर्गुणैः।
कुलैश्वर्यैश्च युज्यन्ते, पुरुषा निर्गुणा अपि।।
स श्लाघ्यः स गुणी धन्यः, स कुलीनः स बुद्धिमान्।
स शूरः स च विक्रान्तो, यस्त्वया देवि! वीक्षितः।।
सद्यो वैगुण्यमायान्ति, शीलाद्याः सकला गुणाः।
पराङ्मुखी जगद्धात्री, यस्य त्वं विष्णु-वल्लभे!।।
न ते वर्णयितुं शक्ता, गुणान् जिह्वाऽपि वेधसः।
प्रसीद देवि पद्माक्षि!, नास्मांस्त्याक्षीः कदाचन।।

।।पराशर उवाच।।

एवं श्रीः संस्तुता सम्यक्, प्राह हृष्टा शत-क्रतुम्।
शृण्वतां सर्व - देवानां, सर्व - भूत - स्थिता द्विज!।।

।।श्रीरुवाच।।

परितुष्टाऽस्मि देवेश!, स्तोत्रेणानेन ते हरे!।
वरं वृणीष्व योऽभीष्टः, वरदाऽहं तवागता।।

।।इन्द्र उवाच।।

वरदा यदि मे देवि!, वरार्हो यदि वाऽप्यहम्।
त्रैलोक्यं न त्वया त्याज्यमेष मेऽस्तु वरः परः।।

स्तोत्रेण यस्तवैतेन, त्वां स्तोष्यत्यब्धि-सम्भवे!।
स त्वया न परित्याज्यो, द्वितीयोऽस्तु वरो मम।।

।।श्रीरुवाच।।

त्रैलोक्यं त्रिदश - श्रेष्ठ!, न सन्त्यक्ष्यामि वासव!।
दत्तो वरो मयाऽयं ते, स्तोत्राराधन - तुष्टया।।
यश्च सायं तथा प्रातः, स्तोत्रेणानेन मानवः।
मां स्तोष्यति न तस्याऽहं, भविष्यामि पराङ्मुखी।।

।।पराशर उवाच।।

एवं वरं ददौ देव - राजाय वै पुरा।
मैत्रेय श्रीर्महा - भागा, स्तोत्राराधन - तोषिता।।
भृगोः ख्यात्यां समुत्पन्ना, श्रीः पूर्वमुदधेः पुनः।
देव - दानव - यत्नेन, प्रस्तूताऽमृत - मन्थने।।
एवं यथा जगत् - स्वामी, देव - राजो जनार्दनः।
अवतारं करोत्येषा, तथा श्रीस्तत् - सहायिनी।।
पुनश्च पद्म - सम्भूता, तथाऽऽदित्योऽभवद्धरिः।
यदा च भार्गवो रामस्तदाऽभूद् धरणी त्वियम्।।
राघवत्वेऽभवत् सीता, रुक्मिणी कृष्ण-जन्मनि।
अन्येषु चावतारेषु, विष्णोरेषाऽन - पायिनी।।
देवत्वे देव - देहेयं, मानुषत्वे च मानुषी।
विष्णोर्देहानुरूपां वै, करोत्येषाऽऽत्मनस्तनुम्।।
यश्चैतच्छृणुयाज्जन्म, लक्ष्म्या यश्च पठेन्नरः।
श्रियो न विच्युतिस्तस्य, गृहे यावत् कुल-त्रयम्।।
पठ्यते येषु चैवैष, गृहेषु श्री - स्तवो मुने!।
अलक्ष्मीः कलहाधारा, न तेष्वास्ते कदाचन।।
एतत्ते कथितं ब्रह्मन्!, यन्मां त्वं परिपृच्छसि।
क्षीराब्धौ श्रीर्यथा जाता, पूर्वं भृगु - सुता सती।।

इति सकल-विभूत्यवाप्ति-हेतुः, स्तुतिरियमिन्द्र-मुखोद्गता हि लक्ष्म्याः।
अनुदिनमिह पठ्यते नृभिर्यैः, वसति न तेषु कदाचिदप्यलक्ष्मीः।।

***

देवी लक्ष्मी की कृपा-पात्रता

'**देवी लक्ष्मी**' किस स्थान में रहती हैं और कहाँ-कहाँ नहीं रहतीं, इसका वर्णन **पुराणादि** में इस प्रकार मिलता है–

■ "मैं **पुण्य-वान्, सु-नीतिज्ञ गृहस्थ** और **राजाओं** के घर स्थिर-भाव से रह कर पुत्र के समान उनका प्रति-पालन करूँगी। **गुरु, देवता, माता, पिता, बान्धव, अतिथि** और **पितृ-लोक** जिनसे रुष्ट होंगे, उनके घर मैं नहीं जा सकती। जो व्यक्ति सदा कोई-न-कोई **सांसारिक** चिन्ता करता रहता है तथा जो **सर्वदा भय-भीत, शत्रु-ग्रस्त** है और जो **अत्यन्त पातकी, ऋण-ग्रस्त** या **अतिशय कृपण** है, उन सब पापियों के घर में मैं पदार्पण नहीं करूँगी।"

■ "जिस व्यक्ति ने '**दीक्षा**' नहीं ली है, जो सर्वदा **शोक-पीड़ित मन्द-बुद्धि** और **कटु-भाषी** है, सदा कलह करता है, जिसके घर में सदैव झगड़ा होता रहता है, उसके घर में मैं प्रवेश नहीं करूँगी।"

■ "जो व्यक्ति **हरि-पूजा** और **हरि का गुण-गान** नहीं करता अथवा जो **हरि की प्रशंसा** करना नहीं चाहता, जो व्यक्ति **पुत्र** या **कन्या-विक्रय, आत्म-विक्रय** और **ज्ञान-विक्रय** करता है, उसका घर नरक के समान है। वहाँ मैं कदापि नहीं जाऊँगी।"

■ "जो व्यक्ति **कृपणता**-दोष से दूषित होकर **माता-पिता, भार्या, गुरु-पत्नी, गुरु-पुत्र, भगिनी, कन्या** और **आश्रय-रहित बान्धवों का पोषण** न करके सर्वदा धन-सञ्चय में लगा रहता है, मैं कभी भी उसके घर नहीं जाऊँगी।"

■ "जिस व्यक्ति के दन्त मैले, वस्त्र मलिन, मस्तक रुक्ष, बिना चन्दन-भस्म का रहता है, खाना-पीना और हास्य विकृत है तथा जो मूर्ख मूत्र व विष्ठा त्याग करते समय मूत्रादि त्याग करनेवाले को देखता है, जो नङ्गा सोता है, जो सायं-काल सोता है, उसके घर में मैं कभी पदार्पण नहीं करूँगी।"

■ "जहाँ **श्वेत कबूतर** रहते हैं, जहाँ **गृहिणी सुन्दरी** और **कलह-हीना** है, वहाँ मैं स्थिर होकर रहती हूँ। जो **प्रिय-वाक्य-भाषी, वृद्धोपसेवी, प्रिय-दर्शन, अल्प-प्रलापी** तथा **अदीर्घ-सूत्री हैं,** जो **धर्म-शील, जितेन्द्रिय, विद्या-विनीत, अगर्वित, जनानुरागी** हैं और जो **परोपतापी** नहीं हैं, वैसे व्यक्तियों के यहाँ मैं सर्वदा रहती हूँ।"

■ "**आमलक** (**आँवला**), **गो-मय** (**गोबर**), **शङ्ख** और **श्वेत वस्त्र, पद्मोत्पल, चन्द्र, महेश्वर, नारायण, वसुन्धरा** और **उत्सव-मन्दिर**–इन सब स्थानों में **लक्ष्मी जी** नित्य अवस्थान करती हैं।"

■ "जो स्त्रियाँ गुण-भक्ति-युक्ता, पति की आज्ञानुवर्तिनी हैं और जो सर्वदा सन्तुष्टा, धीरा, प्रिय-वादिनी, सौभाग्य-युक्ता, लावण्य-मयी, प्रिय-दर्शना हैं, उनमें **लक्ष्मी** जी सर्वदा विद्यमान रहती हैं।"

***

पालक एवं स्थिति की शक्ति लक्ष्मी देवी

■ एक महा-शक्ति ही अवस्था-भेद से १. 'वस्तु' और २. 'शक्ति'–इस द्वि-विध भेद से व्यक्त भाव से परिणत हो रही है। 'वस्तु' को लेकर जिस भाव से 'शक्ति' जगत् का प्रकाश करती है, उस मिश्र चैतन्य-भाव को 'माया' कहते हैं। 'माया' दो भागों में विभक्त है–१. 'शक्ति-गत माया', २. 'वस्तु-गत माया।' वस्तु-गत माया–पुरुष एवं शक्ति-गत 'माया'–प्रकृति है। 'प्रकृति' के सहयोग से 'पुरुष' कार्य-परक होकर जगत्-रूप से दिखाई देता है।

■ जगत् के सृष्टि, स्थिति और संहार-कार्यों के लिए ब्रह्मा, विष्णु और महेश–'परमेश्वर' के त्रि-गुण एवं त्रि-शक्ति को लेकर कार्य करते हैं। इसी से सगुण 'परमेश्वर'– त्रि-शक्ति-धारी हैं। 'त्रि-शक्ति' जिसमें है, वही त्रि-शक्ति-धारी है।

■ १. काल, २. चैतन्य और ३. सत्–इन तीन नित्य चैतन्य-मय वस्तुओं की जो क्रिया-परक अवस्था है, वही 'त्रि-शक्ति' है। १. द्रव्य, २. ज्ञान और ३. क्रिया–ये तीन 'माया-शक्तियाँ' हैं। इस 'त्रि-शक्ति' से मिश्रित होकर 'माया' नामक चैतन्यांश का प्रकाश हो रहा है। 'परमेश्वर' की उपाधि अमूर्त 'महा-माया' केवल त्रि-गुण-मयी है और सूक्ष्माति-सूक्ष्म शक्ति-पुञ्जी-कृता है। यह 'आद्या-शक्ति' ही सृजन, पालन और लय करने के लिए त्रि-देवों को स्थूल कार्य की शक्ति प्रदान करती है।

■ क्रम-विकास ही 'शक्ति' का विकास है। 'विवर्त-वाद' (शाक्त विवर्त-वाद) ही 'प्रकृति' का प्रकाश है। मन्द-मन्द ही 'प्रकृति' की क्रिया होती है। पाश्चात्य विज्ञान का भी यही मत है, किन्तु 'शाक्त-दर्शन' में 'परिणाम-वाद' और 'आभास-वाद' भी दार्शनिक सिद्धान्त हैं, किन्तु अन्य विवर्तादि से इनका मौलिक भेद है।

■ 'पुरुष' और 'प्रकृति' से चैतन्य-प्रवाह एवं वस्तु-संग्रह-पूर्वक जगत्-प्रकाश को जो उपयोगी बनाता है, वही चैतन्य-मय स्वभाव 'पुरुष' या 'ब्रह्मा' हैं। उनकी शक्ति 'सरस्वती' को जो लोग 'ब्रह्मा' की पत्नी समझते हैं, उन्हें स्मरण रखना होगा कि वे उनकी पत्नी नहीं, किन्तु सूक्ष्म 'शक्ति' हैं। अव्यक्त बीज की तरह गुण उनमें रहता है, किन्तु क्रम-शक्ति की सहायता से ही उसका वर्धन होता है।

■ सृष्टि के प्रारम्भ-काल में कुछ भी नहीं था। 'गुण' और 'शक्ति' का जब नव-विकाश प्रारम्भ हुआ, तब 'गुण-त्रय' और 'शक्ति-त्रय' को लेकर जगत् एवं ब्रह्माण्ड का सृजनादि कार्य प्रारम्भ हुआ। जब सूक्ष्माति-सूक्ष्म उक्त 'गुण-त्रय' और 'शक्ति-त्रय' क्रमशः स्थूल से हमारे स्थूल-तर जगत् पर्यन्त में व्याप्त होते हैं, तभी विश्व शोभा-युक्त होता है। १. परमाणु, २. तन्मात्रा और ३. विन्दु–इन्हें लेकर ही जगत् बनता है। 'परमाणु' को 'त्रि-गुण' कहते हैं और 'अहङ्कार-तत्त्व' से प्रकट होनेवाली 'तन्मात्राओं' से यह विश्व सृष्ट होता है।

■ 'विन्दु'–शब्द-ब्रह्म का अव्यक्त त्रि-गुण एवं चिदंश-बीज है। 'नाद' की एक गति है, किन्तु इस गति की भी एक निर्दिष्ट स्थिति है। सुर-ताल-विशिष्ट शब्द को 'छन्द' कहते हैं। इस 'छन्द' की

अधिष्ठात्री देवी **सरस्वती** हैं। **वैदिक मत** से सुर-ताल से विशिष्ट शब्द-रूपी वाक्य चार प्रकार से विभक्त हैं–१. ॐकार, २. भूः, ३. भुवः और ४. स्वः। ये ही **ब्रह्मा की चतुर्विध अवस्थाएँ** हैं। प्रथम **विशुद्ध** 'तुरीय'-भाव समन्वित अवस्था, द्वितीय **फल-मय 'कारण'**-अवस्था, तृतीय **कारण-मय 'सूक्ष्म'**-अवस्था और चतुर्थ **कार्य-मय 'स्थूल'**-अवस्था होती है। इन **चार अवस्थाओं की कल्पना** के आधार पर **'ब्रह्मा' के चार मुखों की कल्पना** है। इसी प्रकार **ब्रह्मादि** को **महा-शक्ति** ने जो **शक्ति-दान** किया है, वे उनकी अधीनस्थ पत्नियाँ नहीं हैं, अपितु **कार्य-कारणात्मिका सूक्ष्म-तमा शक्तियाँ** हैं। इनकी सहायता से ही वे **सृजनादि कार्य** करते हैं।

■ विश्व के पालन-कर्ता **'विष्णु'** ('सत्त्व-गुण') हैं। **सत्त्व-गुण की शक्ति** अर्थात् अधिष्ठात्री **देवी 'कमला' (लक्ष्मी)** हैं। यह **अनन्त सत्ता** पुराण में **'सहस्त्र-शीर्ष-धारी नारायण'** के नाम से विख्यात है। **महा-शक्ति** की **तीन प्रधान सत्ताएँ** जगत् में देखने को मिलती हैं–१. **सत्**, २. **चित्** और ३. **आनन्द**। इस क्रम से उपादान हैं–१. **कारण**, २. **निमित्त कारण** और ३. **आनन्द**। भोगावस्था में ही स्वरूपानुभव होता है। उसे **'आनन्द'** नाम से बताया है, जिसे चरितार्थ करने के लिए **'उपादान'** और **'निमित्त'** कारणों की भी आवश्यकता रहती है।

■ **उपादान-कारण निमित्त-कारण** की सहायता से **'आनन्द'** में परिणत होता है। जैसे अग्नि-तेज काष्ठ-खण्ड का आश्रय लेकर अन्नादि-प्रस्तुति का निमित्त कारण होता है, उसी प्रकार इस **विश्व-कार्य**-रूपी उपादान-समूह को प्रकाशित करने का एक-मात्र निमित्त-कारण है–**'चैतन्य सत्ता'**। यह **चित्-सत्ता** ही **अनन्त-शिरो-धारी शेष-शायी 'नारायण'** हैं।

■ **अनिश्चित गतिवाली काल-शक्ति** की ही कल्पना पुराणों ने **'शेषनाग'** के रूप में की है। **धर्म, अर्थ, काम** और **मोक्ष**–ये **'विष्णु'** के **चार हाथ** हैं। **'प्रवृत्ति'** और **'निवृत्ति'** उनके पाद हैं। **चतुर्दश भुवन** उनका सर्वाङ्ग है। अनन्त ब्रह्माण्ड के अनन्त जीवों के आधार-भूत होने के कारण उनके नाम हैं **'अनन्त देव'** एवं **'अनन्त-शीर्ष-पुरुष'**। देव-देह से **'अहङ्कार'** अर्थात् **'जीवात्मा'** के आश्रय-दाता होकर **पञ्च-प्राण-रूपी सर्प** के आश्रय में **'विष्णु'** सङ्कर्षण-मूर्त्ति धारण कर रहे हैं। **सत्त्व से स्थिति** है। **आविर्भाव** और **तिरोभाव** की अन्तराल स्थिति या अवस्था को **'स्थिति'** कहते हैं। **'ब्रह्मा'** के **रजो-गुण** या **चैतन्य-शक्ति** से **जगत् का आविर्भाव** होता है। **'शिव'** के **तमो-गुण** से **विश्व का तिरोभाव** होता है। इनका अन्तराल ही **'स्थिति'** है।

■ **'लक्ष्मी देवी'-पालक** एवं **स्थिति-कार्य की शक्ति** हैं। **'लक्ष्मी देवी'-महा-माया** या **आद्या-शक्ति** की **विक्षेप-शक्ति** हैं।

■ **'महा-माया'** की शक्ति द्विविध है–१. **आवरण**, २. **विक्षेप**। **आत्मा** क्या है? हम कौन हैं? इन बातों को जो **'शक्ति'** जानने नहीं देती, वही **'आवरण-शक्ति'** है। जिस शक्ति में **सृष्टि-सामर्थ्य** विद्यमान है, वही **'विक्षेप-शक्ति'** है। अज्ञान से मल द्वारा आवृत्त होने से **'जीव'** ने परिवर्तन-शील भ्रम-मय आकाशादि की सृष्टि कर रखी है। **अज्ञान-शक्ति** द्वारा जीव का सृष्टि-कार्य होता है। उसी को **'विक्षेप (विद्या) शक्ति'** कहते हैं। महा-विद्या **'कमला' (लक्ष्मी देवी)** की साधना द्वारा ही यह **'विक्षेप'** अर्थात् **अज्ञान** दूर होता है।

–'कौलाचार्य' पं० नथमल जी दाधीच

***

श्री लक्ष्मी-स्तोत्र-त्रयी

भगवती लक्ष्मी के प्रस्तुत तीनों स्तोत्र अत्यन्त प्रभावी और सद्यः फलदायी हैं। ये सभी स्तोत्र धन-धान्य, सन्तान, यश, विद्या, आरोग्यता, दीर्घायु आदि प्रदान करते हुए, दुर्भाग्य, शत्रु और राज-भय आदि का नाश करने में समर्थ हैं। इन स्तोत्रों के नित्य पाठ के द्वारा साधक समस्त भोगों को भोगकर मोक्ष पाता है। दीपावली, अक्षय नवमी आदि पर्वों पर भगवती लक्ष्मी की पूजा के बाद इनका पाठ करके शुभ और लाभ प्राप्त किया जा सकता है। नित्य पूजन में भी इनका समावेश अत्यन्त लाभदायी है। -सं०

(१) श्री लक्ष्मी-स्तोत्रम्

।।पूर्व-पीठिका।।

लोपामुद्रा श्रियाः पादौ, धृत्वाननाम सादरम्।
ववन्दे स्तवनं चक्रे, तव लक्ष्मि! सदा सती।।१।।
शृणु तत् स्तवनं येन, स्तावकाः स्युर्धनाश्रयाः।
नैक - सम्पत् समायुक्ताः, त्वया प्रसन्नयेक्षिताः।।२।।

।।मूल-पाठ-श्रीलोपामुद्रा उवाच।।

मातः नमामि कमले!, पद्माऽऽयतं सु - लोचने!।
श्रीविष्णु-हृत्-कमलस्थे!, विश्व-मातः नमोऽस्तु ते।।१।।
क्षीर - सागर - सत्पुत्रि!, पद्म - गर्भाभ - सुन्दरि!।
लक्ष्मि प्रसीद सततं, विश्व-मातः नमोऽस्तु ते।।२।।
महेन्द्र - सदने त्वं श्रीः, रुक्मिणि! कृष्ण-भामिनि!।
चन्द्रे ज्योत्स्ना प्रभा सूर्ये, विश्व-मातः नमोऽस्तु ते ।।३।।
स्मितानने जगद्धात्रि!, शरण्ये सुख - वर्द्धिनि!।
जातवेदसि दहने, विश्व - मातः नमोऽस्तु ते।।४।।
ब्रह्माणि त्वं सर्जनाऽसि, विष्णौ त्वं पोषिका सदा।
शिवौ संहारिका - शक्तिः, विश्व-मातः नमोऽस्तु ते।।५।।
त्वया शूरा - गुणी - विज्ञा, धन्या - मान्या - कुलीनका।
कला-शील-कलापाढ्यै, विश्व-मातः नमोऽस्तु ते।।६।।

त्वया गजस्तुरङ्गश्च, स्त्रैणस्तृणं सरः सदः।
देवो गृहं कणः श्रेष्ठा, विश्व-मातः नमोऽस्तु ते।।७।।
त्वया पक्षी-पशुः शय्या, रत्नं पृथ्वी नरो वधूः।
श्रेष्ठा शुद्धा महा-लक्ष्मि!, विश्व-मातः नमोऽस्तु ते।।८।।
लक्ष्मि! श्रि! कमले! पद्मे!, रमे! पद्मोद्भवे! सति!।
अब्धिजे! विष्णु-पत्नि! त्वं, प्रसीद सततं प्रिये!।।९।।

।।फल-श्रुतिः।।

इति स्तुता प्रसन्ना च, श्रीरुवाच पतिव्रताम्।
लोपामुद्रे मुने जाने, वां यत् हृत्तापकारणम्।।१।।
सचेतनं दुनोत्येव, काशी - विश्लेषजोऽनलः।
युवां वाराणसीं प्राप्य, सिद्धिं प्राप्स्यथ ईप्सिताम्।।२।।
ये पठिष्यन्ति मत् - स्तोत्रं, ताप-दारिद्र्य-नाशकम्।
इष्ट - सम्पत्प्रदं तेषां, जय - सन्तति - कारकम्।।३।।
मम सान्निध्यदं बाल - ग्रहादि - व्याधि - नाशनम्।
भविष्यति मम सारूप्यादि - प्रमोक्षणं तथा ।।४।।

।।श्रीलक्ष्मी-नारायण-संहितायां श्रीलोपामुद्रा-कृत श्रीलक्ष्मी-स्तोत्रम्।।

***

(२) श्रीमहा-लक्ष्मी-ललिता-स्तोत्रम्

।।ध्यानम्।

"चक्राकारं महत्तेजः, तन्मध्ये परमेश्वरी।
जगन्माता जीव - दात्री, नारायणी परमेश्वरी।।१।।
व्यूह - तेजो - मयी ब्रह्मानन्दिनी हरि - सुन्दरी।
पाशांकुशेक्षु-कोदण्ड, पद्म-माला-लसत्करा"।।२।।
दृष्ट्वा तां मुमुहुर्देवाः, प्रणेमुर्विगत-ज्वराः।
तुष्टुवुः श्रीमहा-लक्ष्मीं, ललितां वैष्णवीं पराम्।।३।।

।।श्रीदेवाः ऊचुः।।

जय लक्ष्मि जगन्मातः!, जय लक्ष्मि परात्परे!।
जय कल्याण-निलये!, जय सर्व-कलात्मिके!।।१।।
जय ब्राह्मि! महा-लक्ष्मि!, ब्रह्मात्मिके! परात्मिके!।
जय नारायणि! शान्ते!, जय श्रीललिते! रमे!।।२।।

जय श्रीविजये! देवीश्वरि! श्रीदे! जयर्द्धिदे!।
नमः सहस्र - शीर्षायै, सहस्रानन - लोचने!।।३।।
नमः सहस्र - हस्ताब्ज - पाद - पङ्कज - शोभिते!।
अणोरणुतरे लक्ष्मि!, महतोऽपि महीयसि।।४।।
अतलं ते स्मृतौ पादौ, वितलं जानुनी तव।
रसातलं कटिस्ते च, कुक्षिस्ते पृथिवी मता।।५।।
हृदयं भुवः स्वस्तेऽस्तु, मुखं सत्यं शिरो मतम्।
दृशश्चन्द्रार्क-दहना, दिशः कर्णा भुजः सुराः।।६।।
मरुतस्तु तवोच्छ्वासा, वाचस्ते श्रुतयो मताः।
क्रीडा ते लोक-रचना, सखा ते परमेश्वरः।।७।।
आहारस्ते सदानन्दो, वासस्ते हृदयो हरेः।
दृश्यादृश्य-स्वरूपाणि!, रूपाणि भुवनानि ते।।८।।
शिरोरुहा घनास्ते वै, तारकाः कुसुमानि ते।
धर्माद्या बाहवस्ते च, कालाद्या हेतयस्तव।।९।।
यमाश्च नियमाश्चापि, कर - पाद - नखास्तव।
स्तनौ स्वाहा-स्वधाकारौ, सर्व-जीवन-दुग्धदौ।।१०।।
प्राणायामस्तव श्वासो, रसना ते सरस्वती।
महीरुहास्तेऽङ्गरुहाः, प्रभातं वसनं तव ।।११।।
आदौ दया धर्म - पत्नी, ससर्ज निखिलाः प्रजाः।
हृत्स्था त्वं व्यापिनी लक्ष्मीः, मोहिनी त्वं तथा परा।।१२।।
इदानीं दृश्यसे ब्राह्मी, नारायणी प्रियङ्करी।
नमस्तस्यै महा-लक्ष्म्यै, गज-मुख्यै नमो नमः।।१३।।
सर्व-शक्त्यै सर्व-धात्र्यै, महा-लक्ष्म्यै नमो नमः।
या ससर्ज विराजं च, ततोऽजं विष्णुमीश्वरम्।।१४।
रुदं तथा सुराग्र्याँश्च, तस्यै लक्ष्म्यै नमो नमः।
त्रिगुणायै निर्गुणायै, हरिण्यै ते नमो नमः।।१५।।
यन्त्र - तन्त्रात्मिकायै ते, जगन्मात्रे नमो नमः।
वाग्विभूत्यै गुरु-तन्व्यै, महा-लक्ष्म्यै नमो नमः।।१६।।
कम्भरायै सर्व - विद्याभरायै ते नमो नमः।
जया-ललिता-पाञ्चाली, रमा-तन्वै नमो नमः।।१७।।

पद्मावती - रमा - हंसी, सु - गुणाऽऽज्ञाश्रियै नमः।
नमः स्तुता प्रसन्नैवंछन्दयामास सद्वरैः।।१८।।

।।फल-श्रुति-श्री लक्ष्मी उवाच।।

स्तावका मे भविश्यन्ति, श्री - यशो - धर्म-सम्भृताः।
विद्या - विनय - सम्पन्ना, निरोगा दीर्घ-जीविनः।।१।।
पुत्र - मित्र - कलत्राढ्या, भविष्यन्ति सु-सम्पदः।
पठनाच्छ्रवणादस्य, शत्रु-भीतिर्विनश्यति।।२।।
राज-भीतिः कदनानि, विनश्यन्ति न संशयः।
भुक्तिं मुक्तिं भाग्यमृद्धिमुत्तमां च लभेन्नरः।।३।।

।।श्रीलक्ष्मी-नारायण-संहितायां देव-सङ्घ-कृता श्रीमहा-लक्ष्मी-ललिता-स्तोत्रम्।।

***

(३) श्रीलक्ष्मी-नामावली-स्तोत्रम्

ब्राह्मी[१] नारायणी[२] श्रीश्चाक्षरी[३-४] मुक्तानिता[५-६] रमा[७]।
ब्रह्म-प्रिया[८] च कमला[९], हरि-प्रिया[१०] च माणिकी[११]।।१।।
राधा[१२] लक्ष्मीः[१३] परा-विद्या[१४], रमा[१५] श्रीः[१६] च नारायणी[१७]।
विद्या[१८] सरस्वती[१९] माता, वैष्णवी[२०] पद्मिनी[२१] सती[२२]।।२।।
पद्मा[२३] च पद्मजा[२४] चाब्धि-पुत्री[२५] रम्भा[२६] च राधिका[२७]।
भूर्लीला[२८] सुखदा-लक्ष्मीः[२९], हरिणी[३०] माधवीश्वरि[३१-३२]।।३।।
गौरी[३३] कार्ष्णी[३४] कृष्ण-नारायणी[३५] स्वाहा[३६] स्वधा[३७] रतिः[३८]।
सम्पत् - स्मृद्धिर्वासुदेवी[३९], विरजा[४०] च हिरण्मयी[४१]।
भार्गवी[४२] शिव-राज्ञी[४३], श्रीरामा[४४] श्रीकान्त-वल्लभा[४५]।।४।।

।।फल-श्रुति।।

एतानि लक्ष्मी - नामानि, सदा प्रातः पठेद्धियः।
स पुत्र-पौत्रादि-युक्तः, श्रियमाप्नोत्य-नाशिनीम्।।१।।

।।श्रीलक्ष्मी-नारायण-संहितायां श्रीलक्ष्मी-नामावली-स्तोत्रम्।।

-'कुल-वाणी-रत्न' श्री भैरवानन्दनाथ जी

***

श्रीमहा-लक्ष्मी-अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्र

।।पूर्व-पीठिका-श्री देव्युवाच।।

देव - देव महा - देव!, त्रिकालज्ञ महेश्वर!।
करुणाकर देवेश!, भक्तानुग्रह - कारक!।
अष्टोत्तर - शतं लक्ष्म्याः, श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः।।१

।।श्रीईश्वर उवाच।।

देवि साधु महा - भागे, महा - भाग्य - प्रदायकम्।
सर्वैश्वर्य - करं पुण्यं, सर्व - पाप - प्रणाशनम्।।२
सर्व - दारिद्र्य - शमनं, श्रवणाद् - भुक्ति - मुक्तिदम्।
राज - वश्य - करं दिव्यं, गुह्याद्-गुह्यतमं परम्।।३
दुर्लभं सर्व - देवानां, चतुः - षष्टि - कलास्पदम्।
पद्मादीनां वरान्तानां, विधीनां नित्य - दायकम्।।४
समस्त देव संसेव्यमणिमा - अष्ट - सिद्धिदम्।
किमत्र बहुनोक्तेन, देवी प्रत्यक्ष - दायकम्।।५
तव प्रीत्याद्य वक्ष्यामि, समाहित - मनाः शृणुम्।
अष्टोत्तर - शतस्यास्य, महा - लक्ष्मीस्तु देवता।।६
क्लीं बीज - पदमित्युक्तं, शक्तिस्तु भुवनेश्वरी।
अङ्ग - न्यासः कर - न्यासः, स इत्यादिः प्रकीर्तितः।।७

।।ध्यान।।

वन्दे पद्म-करां प्रसन्न-वदनां सौभाग्यदां भाग्यदाम्।
हस्ताभ्यामभय-प्रदां मणि-गणैर्नाना-विधैर्भूषिताम्।।१

***

भक्ताभीष्ट-फल-प्रदां हरि-हर-ब्रह्मादिभिः सेविताम्।
पार्श्वे पङ्कज-शङ्ख-पद्म-निधिभिर्युक्तां सदा शक्तिभिः।।२

***

सरसिज-नयने! सरोज-हस्ते! धवल-तरांशुक-गन्ध-माल्य-शोभे!।
भगवति हरि-वल्लभे! मनोज्ञे! त्रि-भुवन-भूति-करि! प्रसीद मह्यम्।।३

।।मूल अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम्।।

प्रकृतिं[१] विकृतिं[२] विद्यां[३], सर्व - भूत - हित - प्रदाम्[४]।
श्रद्धां[५] विभूतिं[६] सुरभिं[७], नमामि परमात्मिकाम्[८]।।०१
वाचं[९] पद्मालयां[१०] पद्मां[११], शुचिं[१२] स्वाहां[१३] स्वधां[१४] सुधाम्[१५]।
धन्यां[१६] हिरण्मयीं[१७] लक्ष्मीं[१८], नित्य-पुष्टां[१९] विभावरीम्[२०]।।०२
अदितिं[२१] च दितिं[२२] दीप्तां[२३], वसुधां[२४] वसु-धारिणीम्[२५]।
नमामि कमलां[२६] कान्तां[२७], कामाक्षीं[२८] क्रोध-सम्भवाम्[२९]।।०३
अनुग्रह - पद - बुद्धिमनघा[३०-३१] हरि - वल्लभाम्[३२]।
अशोकाममृतां[३३-३४] दीप्तां[३५], लोक-शोक-विनाशिनीम्[३६]।।०४
नमामि धर्म - निलयां[३७], करुणां[३८] लोक - मातरम्[३९]।
पद्म-प्रियां[४०] पद्म-हस्तां[४१], पद्माक्षीं[४२] पद्म-सुन्दरीम्[४३]।।०५
पद्मोद्भवां[४४] पद्म - मुखीं[४५], पद्म - नाभ - प्रिया - रमाम्[४६]।
पद्म-माला-धरां देवीं[४७], पद्मिनीं[४८] पद्म-गन्धिनीम्[४९]।।०६
पुण्य - गन्धां[५०] सु - प्रसन्नां[५१], प्रसादाभिमुखीं[५२] प्रभाम्[५३]।
नमामि चन्द्र - वदनां[५४], चन्द्रां[५५] चन्द्र - सहोदरीम्[५६]।।०७
चतुर्भुजां[५७] चन्द्र - रूपामिन्दिरामिन्दु - शीतलाम्[५८-६०]।
आह्लाद-जननीं[६१] पुष्टिं[६२], शिवां[६३] शिव-करीं[६४] सतीम्[६५]।।०८
विमलां[६६] विश्व-जननीं[६७], तुष्टिं[६८] दारिद्र्य-नाशिनीम्[६९]।
प्रीति-पुष्करिणीं[७०] शान्तां[७१], शुक्ल-माल्याम्बरां[७२] श्रियम्[७३]।।०९
भास्करीं[७४] बिल्व-निलयां[७५], वरारोहां[७६] यशस्विनीम्[७७]।
वसुन्धरामुदाराङ्गीं[७८-७९], हरिणीं[८०] हेम - मालिनीम्[८१]।।१०
धन-धान्य-करीं[८२] सिद्धिं[८३], सदा सौम्यां[८४] शुभ-प्रदाम्[८५]।
नृप - वेशङ्गतानन्दां[८६], वर - लक्ष्मीं[८७] वसु - प्रदाम्[८८]।।११

शुभां[८९] हिरण्य - प्राकारां[९०], समुद्र - तनयां[९१] जयाम्[९२]।
नमामि मङ्गलां देवीं[९३], विष्णु-वक्षः-स्थल-स्थिताम्[९४]।।१२
विष्णु-पत्नीं[९५] प्रसन्नाक्षीं[९६], नारायण - समाश्रिताम्[९७]।
दारिद्र्य - ध्वंसिनीं देवीं[९८], सर्वोपद्रव - हारिणीम्[९९]।।१३
नव-दुर्गां[१००] महा-कालीं[१०१], ब्रह्म-विष्णु-शिवात्मिकाम्[१०२]।
त्रिकाल - ज्ञान - सम्पन्नां[१०३] नमामि भुवनेश्वरीम्[१०४]।।१४
लक्ष्मीं[१०५] क्षीर-समुद्र-राज-तनयां[१०६] श्रीरङ्ग-धामेश्वरीम्[१०७]।
दासी - भूत - समस्त - देव-वनितां लोकैक - दीपांकुराम्[१०८]।।१५

।।स्तुति।।

श्रीमन्मन्द-कटाक्ष-लब्ध-विभव-ब्रह्मेन्द्र-गङ्गाधारां त्वाम्।
त्रैलोक्य-कुटुम्बिनीं सर-सिजां वन्दे मुकुन्द-प्रियाम्।।१
मातः नमामि कमले!, कमलायताक्षि!।
श्रीविष्णु - हृत् - कमल - वासिनि! विश्व-मातः!।।२
क्षीरोदजे! कमल - कोमल - गर्भ - गौरि!,
लक्ष्मि! प्रसीद सततं नमतां शरण्ये।।३

।।फल-श्रुति।।

त्रिकालं यो जपेद् विद्वान्, षण्मासं विजितेन्द्रियः।
दारिद्र्य - ध्वंसनं कृत्वा, सर्वमाप्नोत्य - यत्नतः।।१
देवी - नाम - सहस्त्रेषु, पुण्यमष्टोत्तरं शतम्।
येन श्रियमवाप्नोति, कोटि - जन्म - दरिद्रतः।।२
भृगु - वारे शतं धी - मान्, पठेद्-वत्सर-मात्रकम्।
अष्टैश्वर्यमवाप्नोति, कुबेर इव भू - तले।।३
दारिद्र्य - मोचनं नाम, स्तोत्रमम्बापरं शतम्।
येन श्रियम वाप्नोति, कोटि - जन्म दरिद्रितः।।४
भुक्त्वा तु विपुलान् भोगानस्याः सायुज्यमाप्नुयात्।
प्रातः - काले पठेन्नित्यं, सर्व - दुःखोपशान्तये।
पठंस्तु चिन्तये इवीं, सर्वाभरण भूषिताम्।।५

।।श्रीमहा-लक्ष्म्यष्टोत्तर-शत-नाम स्तोत्रम्।।

भगवती महा-लक्ष्मी के विविध ध्यान

(गुप्तावतार बाबाश्री के दुर्लभ उपहार 'मन्त्रात्मक सप्तशती' से)

१. भृगु ऋषि द्वारा आराधिता भगवती महा-लक्ष्मी का ध्यान

कान्त्या काञ्चन - सन्निभां हिम - गिरि - प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः।
हस्तोत्क्षिप्त - हिरण्मयामृत - घटैरासिच्य - मानां श्रियम्।।
विभ्राणां वरमब्ज - युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम्।
क्षौमाबद्ध-नितम्ब-बिम्ब-वलितां वन्देऽरविन्द-स्थिताम्।।

उक्त प्रसिद्ध ध्यान के द्वारा एकाक्षर बीज (श्रीं) की साधना की जाती है।

***

२. देवताओं द्वारा पूजिता भगवती महा-लक्ष्मी का ध्यान

जयतु जयतु देवी देव - सङ्घाभि - पूज्या।
जयतु जयतु भद्रा भार्गवी भाग्य-रूपा।।
जयतु जयतु सत्या सर्व - भूतान्तरस्था।
कर-पद-हृदयस्था लुब्ध - चित्ता भजेऽहम्।।

उक्त ध्यान लुब्ध-चित्ता अर्थात् अत्यन्त उत्सुक मन से करना चाहिए।

***

३. षोडश-भुजा भगवती महा-लक्ष्मी का ध्यान

अक्ष - स्त्रक् - परशुं गदेषु - कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्।
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म - जलजं घण्टां सुरा - भाजनम्।।
शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल - प्रभाम्।
सेवे सैरिभ - मर्दिनीमिह महा - लक्ष्मीं सरोज - स्थिताम्।।

श्री दुर्गा सप्तशती के मध्यम चरित का प्रसिद्ध ध्यान।

***

४. पीले आभरणों से शोभायमान महा-लक्ष्मी का ध्यान

पीताम्बरां पीत - माल्यां, पीताभरण - भूषिताम्।
पीत - कञ्ज - पद - द्वन्द्वां, कमलां चिन्तयेऽनिशम्।।

भगवती महा-लक्ष्मी का उक्त ध्यान निरन्तर करने से भगवती की कृपा की प्राप्ति होती है।

***

५. खिले हुए नीले कमल की आभावाली भगवती महा-लक्ष्मी का ध्यान

समुन्मीलन् नीलाम्बुज - निकर - नीराजित - रुचा-
मपाङ्गनां भृगैरमृत - लहरी - श्रेणि - मसृणैः।
ह्रिया हीनं दीनं भृशमुदर - लीनं करुणया,
हरि - श्यामा सा मामवतु जड - सामाजिकमपि।।

अर्थात् करुणामयी भगवती महा-लक्ष्मी दरिद्रता, कष्ट , शोक को पूरी तरह विलीन करनेवाली हैं।

***

६. सकल-जननी आद्या-शक्ति महा-लक्ष्मी का ध्यान

वन्दे लक्ष्मीं पर - शिव-मयीं शुद्ध - जाम्बू-नदाभाम्,
तेजो - रूपां कनक - वसनां सर्व - भूषोज्ज्वलाङ्गीम्।
बीजापूरं कनक - कलशं हेम - पद्मं दधाना-
माद्यां शक्तिं सकल - जननीं विष्णु - वामाङ्क - संस्थाम्।।

***

७. बुद्धि-दात्री एवं दुर्भाग्य-नाशिनी भगवती महा-लक्ष्मी का ध्यान

श्रीं-वीजे! नाद-विन्दु-द्वितय-शशि-कलाकार-रूपे! स्वरूपे!
मातर्मे देहि बुद्धिं जहि जहि दुरितं पाहि मां दीन-नाथे!
अज्ञान-ध्वान्त-नाशे! क्षय-रुचि-रुचिरे! प्रोल्लसत्-पाद-पद्मे!
ब्रह्मेशाद्यैः सुरेन्द्रैः सुर-गण-नमिते! संस्तुते त्वां नमामि।।

***

८. सभी को वशीभूत करनेवाली विष्णु-प्रिया शाङ्करी महा-लक्ष्मी का ध्यान

यन्मोह्यौ मधु - कैटभौ प्रकृतिः सा माया महा - लक्ष्यदा,
त्वं सिद्धिः त्रिपुरान्तका स्मर - रिपु - सम्मोहिनी मोहदा।
यामाराध्य स विष्णु विश्व - कर्ता ब्रह्मा शिवो संहृतिः,
सा मां पातु सदैव सर्व - वशगा विष्णु - प्रिया शाङ्करी।।

***

९. त्रिशूल, पद्म, चक्र, गदा-धारिणी बाल-कुमारी महा-लक्ष्मी का ध्यान

ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां, षड् - भुजां च चतुर्मुखाम्।
त्रिनेत्रां च त्रिशूलां च, पद्म - चक्र - गदा - धराम्।।
पीताम्बर - धरां देवीं, नानालङ्कार - भूषिताम्।
तेजः - पुञ्ज - धरां श्रेष्ठां, ध्यायेद् बाल - कुमारिकाम्।।

***

१०. षट्-चक्र-निवासिनी भगवती महा-लक्ष्मी का ध्यान

षडाधार-पङ्केरुहान्तर्विराजत्-सुषुम्नान्तरालेऽति-तेजोल्लसन्तीम्।
सुधा-मण्डलं द्रावयन्तीं पिबन्तीं सुधा-मूर्तिमीडेऽहमानन्द-रूपाम्।।

सहस्रार से स्रवित अमृत का पान करानेवाली भगवती महा-लक्ष्मी।

***

११. विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र द्वारा आराधिता भगवती महा-लक्ष्मी का ध्यान

उद्यद् - भानु - सहस्त्र-कान्तिममलां विद्युच्छटा - भास्वराम्।
खड्गं चर्म - वराभयं विदधतीं केयूर - हारोज्ज्वलाम्।।
सूर्य - काल - समुद्र - वेद - प्रकृतिं श्रीश्चोदयन्तीं भ्रुवैः।
विष्णु - ब्रह्म - सुरेन्द्र - सेवित - पदां श्रीक्षीरजां चिन्तयेत्।।

क्षीर-सागर से उत्पन्न भगवती महा-लक्ष्मी।

***

१२. शत्रुओं को भयभीत करनेवाली भगवती महा-लक्ष्मी का ध्यान

धूम्राभां धूम्र-वस्त्रां प्रकटित-दशनां मुक्त-केशीं दुरन्ताम्।
नित्यं कलहान्तरालां मुहुरति-कुटिलां क्रोध-मोहाधिकाराम्।।
चर्वन्तीमस्थि-खण्डं विषय-द्विष-करां शत्रूणां भीतिदास्या।
लक्ष्मी द्विषतामलक्ष्मी हरतु मम भयं पातु मां श्रीरनाद्या।।

अलक्ष्मी अर्थात् दरिद्रता का हरण कर रक्षा करनेवाली भगवती महा-लक्ष्मी।

***

१३. जगत्-संरक्षिणी भगवती महा-लक्ष्मी का ध्यान

चाञ्चल्यारुण - लोचनाञ्चित - कृपा - चन्द्रार्क - चूडामणिम्।
चारु - स्मेर - मुखां चराचर - जगत् - संरक्षिणीं तत् - पदाम्।।
चञ्चच्चम्पक - नासिकाग्र - विलसन्मुक्ता - मणी - रञ्जिताम्।
श्रीयुद्ध - स्थल - वासिनीं विजयते शत्रून् कटाक्षैर्हरन्।।

शत्रुओं का कटाक्ष मात्र से हनन करनेवाली भगवती महा-लक्ष्मी।

***

१४. विजय-प्रदायिनी भगवती महा-लक्ष्मी का ध्यान

समुन्मीलत्वन्तः-करण-करुणोद्गार-चतुरः।
करि-प्राण-त्राण-प्रणयिनि दृगन्तस्तव मयि।।
तवेदं सौन्दर्यं महिष - सेनायास्सहाया।
सहायोद्धुं वीरा प्रहसन - परा श्रीर्विजयते।।

अनुपम सुन्दरी एवं अट्टहास करनेवाली भगवती महा-लक्ष्मी।

***

श्रीमहा-लक्ष्मी-नामावली-साधना

■ प्रस्तुत **श्रीमहा-लक्ष्मी-नामावली-भगवान् शिव** के द्वारा कथित है। इसके सम्बन्ध में पूर्व-पीठिका में कहा गया है कि–

शीघ्र - सम्पत् - समृद्ध्यर्थं, भार्गवेण कृता पुरा।
श्रीमत् - त्रिपुर - सुन्दर्याः, सा पूजा कथ्यते मया।।
यथाऽति - मन्द - भाग्योऽपि, कुबेर - सदृशो भुवि।
जायते नात्र सन्देहस्तां पूजां शृणु वल्लभे!।।

अर्थात् सम्पत्ति की त्वरित प्राप्ति के लिए पहले **भार्गव श्रीपरशुराम** ने जिस पूजा का आश्रय लिया था, उस **श्रीत्रिपुर-सुन्दरी** की पूजा का मैं वर्णन करता हूँ। जिससे मन्दभागी मनुष्य भी पृथ्वी पर निःसन्देह **कुबेर** के समान बन जाता है।

■ यहाँ प्रस्तुत **भगवती श्रीमहा-लक्ष्मी** के पूजन के **१८४ नामों की माला में भगवती लक्ष्मी** के सभी महत्त्व-पूर्ण नामों का समावेश हुआ है। **श्री-सूक्त** की ऋचाओं में जो नाम आते हैं, वे भी यहाँ प्रस्तुत **नामावली** में हैं।

■ **भगवती महा-लक्ष्मी** के चित्र अथवा यन्त्र के सम्मुख '**दीपक**' आदि जलाकर मानसिक रूप से यहाँ प्रस्तुत '**नमः**' से युक्त **नामावली** द्वारा **जप** किया जा सकता है। अथवा **अक्षत** से, **पुष्पों** से या **भगवती लक्ष्मी** को प्रिय लगनेवाली वस्तुओं–**बिल्व-फल, आँवला, दाख, कमलगट्टे** और **ताल-मखाने** से **पूजा** की जा सकती है। **पूजा** करने हेतु '**नमः**' के स्थान पर '**पूजयामि नमः**' कहना चाहिए।

■ '**जप**' अथवा '**पूजन**' करने के पूर्व सबसे पहले गुरु आदि का स्मरण कर '**ध्यान**' करना चाहिए। यथा–

नमस्तेऽस्तु महा-माये, श्री-पीठे सुर-पूजिते।
शङ्ख-चक्र-गदा हस्ते, महा-लक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।

■ फिर प्रस्तुत '**नामावली**' द्वारा '**जप**' अथवा '**पूजन**' करना चाहिए–

१. ॐ श्री हार-नूपुर-संयुक्तायै नमः
२. ॐ श्री कमल-द्वय-धारिण्यै नमः
३. ॐ श्री लक्ष्म्यै नमः
४. ॐ श्री पर-शिव-मय्यै नमः
५. ॐ श्री शुद्ध-जाम्बू-नद-प्रभायै नमः
६. ॐ श्री तेजो-रूपायै नमः
०७. ॐ श्री कमल-वसत्यै नमः
०८. ॐ श्री विश्व-मोहिन्यै नमः
०९. ॐ श्री सर्व-भूषोज्ज्वलायै नमः
१०. ॐ श्री बीजापूर-धरायै नमः
११. ॐ श्री आद्या-शक्तये नमः
१२. ॐ श्री सकल-जनन्यै नमः

१३. ॐ श्री कलश-धारिण्यै नमः
१४. ॐ श्री विष्णु-वामाङ्ग-संस्थायै नमः
१५. ॐ श्री कमलालयायै नमः
१६. ॐ श्री श्रीमत्-सौभाग्य-जनन्यै नमः
१७. ॐ श्री भार्गव्यै नमः
१८. ॐ श्री सनातन्यै नमः
१९. ॐ श्री सर्व-काम-फलावाप्ति-साधन-सुखावहायै नमः
२०. ॐ श्री हिरण्य-वर्णायै नमः
२१. ॐ श्री हरिण्यै नमः
२२. ॐ श्री सुवर्ण-ललित-स्त्रजायै नमः
२३. ॐ श्री समस्त-सम्पत्-सुखदायै नमः
२४. ॐ श्री अखिल-सौभाग्य-दायिन्यै नमः
२५. ॐ श्री समस्त-कल्याण-कर्यै नमः
२६. ॐ श्री ज्ञानदायै नमः
२७. ॐ श्री हरि-प्रियायै नमः
२८. ॐ श्री विज्ञान-सम्पत्-सुखदायै नमः
२९. ॐ श्री अश्व-पूर्णायै नमः
३०. ॐ श्री हिरण्मय्यै नमः
३१. ॐ श्री विचित्र-वाग्-भूति-कर्यै नमः
३२. ॐ श्री रथ-मध्यायै नमः
३३. ॐ श्री मनोहरायै नमः
३४. ॐ श्री हस्ति-नाद-प्रमोदायै नमः
३५. ॐ श्री अनन्त-सौभाग्य-दायिन्यै नमः
३६. ॐ श्री सर्व-भूतान्तरस्थायै नमः
३७. ॐ श्री स्वर्ण-प्राकार-मध्यगायै नमः
३८. ॐ श्री समस्त-भूतेश्वर्यै नमः
३९. ॐ श्री विश्व-रूपायै नमः
४०. ॐ श्री प्रभा-मय्यै नमः
४१. ॐ श्री दारिद्र्य-दुःखौघ-तमोपहन्त्र्यै नमः
४२. ॐ श्री पद्मिन्यै नमः
४३. ॐ श्री दीनार्ति-विच्छेद-दक्षायै नमः
४४. ॐ श्री कृपा-कलित-लोचनायै नमः
४५. ॐ श्री प्रणत-स्वान्त-शोकघ्न्यै नमः
४६. ॐ श्री शरणागत-रक्षणायै नमः
४७. ॐ श्री शान्त्यै नमः
४८. ॐ श्री कान्त्यै नमः
४९. ॐ श्री पद्म-संस्थायै नमः
५०. ॐ श्री कमनीय-गुणाश्रयायै नमः
५१. ॐ श्री क्षान्त्यै नमः
५२. ॐ श्री दान्त्यै नमः
५३. ॐ श्री दुरित-क्षय-कारिण्यै नमः
५४. ॐ श्री शशि-शेखर-संस्थायै नमः
५५. ॐ श्री धन-धान्य-समृद्धिदायै नमः
५६. ॐ श्री शक्त्यै नमः
५७. ॐ श्री रक्त्यै नमः
५८. ॐ श्री नित्य-पुष्टायै नमः
५९. ॐ श्री रजनी-कर-सोदरायै नमः
६०. ॐ श्री करीषिण्यै नमः
६१. ॐ श्री भक्त्यै नमः
६२. ॐ श्री भव-सागर-तारिण्यै नमः
६३. ॐ श्री मत्यै नमः
६४. ॐ श्री सिद्ध्यै नमः
६५. ॐ श्री धृत्यै नमः
६६. ॐ श्री मधुसूदन-वल्लभायै नमः
६७. ॐ श्री पुष्ट्यै नमः
६८. ॐ श्री हिरण्य-मालायै नमः
६९. ॐ श्री शुभ-लक्षण-लक्षितायै नमः

७०. ॐ श्री अति-दुर्गति-हन्त्र्यै नमः
७१. ॐ श्री वर-सद्-गति-दायिन्यै नमः
७२. ॐ श्री दिवि-देव-गणाराध्यायै नमः
७३. ॐ श्री भुवनार्ति-विनाशिन्यै नमः
७४. ॐ श्री आर्द्रायै नमः
७५. ॐ श्री पुष्करिणी-पुष्ट्यै नमः
७६. ॐ श्री धरणी-धर-वल्लभायै नमः
७७. ॐ श्री दारिद्र्य-दुःख-हन्त्र्यै नमः
७८. ॐ श्री भय-विध्वंसिन्यै नमः
७९. ॐ श्री श्रीविष्णु-वक्ष-स्थलगायै नमः
८०. ॐ श्री अशेष-सु-विभूतिदायै नमः
८१. ॐ श्री लक्षणालक्षिताङ्ग्यै नमः
८२. ॐ श्री पद्मायै नमः
८३. ॐ श्री पद्मासनार्चितायै नमः
८४. ॐ श्री विद्या-सम्पत्कर्यै नमः
८५. ॐ श्री देव-सङ्घाभि-पूजितायै नमः
८६. ॐ श्री भद्रायै नमः
८७. ॐ श्री भाग्य-रूपायै नमः
८८. ॐ श्री नित्यायै नमः
८९. ॐ श्री निर्मल-बुद्धिदायै नमः
९०. ॐ श्री सत्यायै नमः
९१. ॐ श्री सर्व-भूत-संस्थायै नमः
९२. ॐ श्री रत्न-गर्भान्तर-स्थितायै नमः
९३. ॐ श्री रम्यायै नमः
९४. ॐ श्री शुद्धायै नमः
९५. ॐ श्री कान्तायै नमः
९६. ॐ श्री कान्ति-मद्-भासिताङ्गायै नमः
९७. ॐ श्री सर्व-सौख्य-प्रदा-देव्यै नमः
९८. ॐ श्री भक्तौघाभय-दायिन्यै नमः
९९. ॐ श्री श्वेत-द्वीप-कृतावासायै नमः
१००. ॐ श्री जगन्मात्रे नमः
१०१. ॐ श्री जगन्मय्यै नमः
१०२. ॐ श्री रत्न-गर्भ-स्थितायै नमः
१०३. ॐ श्री सौम्यायै नमः
१०४. ॐ श्री क्षीराम्बुधि-कृतालयायै नमः
१०५. ॐ श्री प्रसन्न-हृदयायै नमः
१०६. ॐ श्री परिपूर्णायै नमः
१०७. ॐ श्री हिरण्मय्यै नमः
१०८. ॐ श्री वसुन्धरायै नमः
१०९. ॐ श्री श्रीधरायै नमः
११०. ॐ श्री वसुदोग्ध्र्यै नमः
१११. ॐ श्री कृपा-मय्यै नमः
११२. ॐ श्री विष्णु-प्रियायै नमः
११३. ॐ श्री रत्न-गर्भायै नमः
११४. ॐ श्री समस्त-फलदायै नमः
११५. ॐ श्री रसातल-गतायै नमः
११६. ॐ श्री सु-व्रतायै नमः
११७. ॐ श्री हरि-प्रियायै नमः
११८. ॐ श्री धरणी-गर्भ-संस्थायै नमः
११९. ॐ श्री समुन्नत-मुख्यै नमः
१२०. ॐ श्री समस्त-पुर-संस्थायै नमः
१२१. ॐ श्री परिपूर्ण-मनोरथायै नमः
१२२. ॐ श्री करुणा-रस-निःष्यन्द-नेत्र-द्वय-विलासिन्यै नमः
१२३. ॐ श्री सर्व-राज-गृहावासायै नमः
१२४. ॐ श्री महा-लक्ष्म्यै नमः
१२५. ॐ श्री गुणान्वितायै नमः
१२६. ॐ श्री वैकुण्ठ-नगरस्थायै नमः
१२७. ॐ श्री क्षीर-सागर-कन्यकायै नमः
१२८. ॐ श्री योगि-हृत्-पद्म-संस्थायै नमः

१२९. ॐ श्री कल्प-वल्यै नमः
१३०. ॐ श्री दयावत्यै नमः
१३१. ॐ श्री भक्त-चिन्तामण्यै नमः
१३२. ॐ श्री आदि-मायायै नमः
१३३. ॐ श्री इन्दिरायै नमः
१३४. ॐ श्री रमायै नमः
१३५. ॐ श्री निराकारायै नमः
१३६. ॐ श्री साकारायै नमः
१३७. ॐ श्री ब्रह्माण्ड-धारिण्यै नमः
१३८. ॐ श्री एक-नाथायै नमः
१३९. ॐ श्री आद्य-लक्ष्म्यै नमः
१४०. ॐ श्री अज्ञान-हन्त्र्यै नमः
१४१. ॐ श्री गुणातिगायै नमः
१४२. ॐ श्री प्रज्ञान-लोचनायै नमः
१४३. ॐ श्री अशेष-वाग्-जाड्य-मल-हारिण्यै नमः
१४४. ॐ श्री सु-स्पष्ट-वाक्-प्रदायै नमः
१४५. ॐ श्री सर्व-सम्पद्-विराजितायै नमः
१४६. ॐ श्री प्रभा-लावण्य-सुभगायै नमः
१४७. ॐ श्री दोग्ध्र्यै नमः
१४८. ॐ श्री स्वर्ण-प्रदायै नमः
१४९. ॐ श्री समस्त-विघ्नौघ-हन्त्र्यै नमः
१५०. ॐ श्री भोगदायै नमः
१५१. ॐ श्री विचक्षणायै नमः
१५२. ॐ श्री देवाधि-नाथ-वन्द्यायै नमः
१५३. ॐ श्री दीन-पोषण-तत्परायै नमः
१५४. ॐ श्री माङ्गल्य-बीज-महिम्ने नमः
१५५. ॐ श्री निधि-रूपिण्यै नमः
१५३. ॐ श्री अनन्तगायै नमः
१५७. ॐ श्री आद्यायै नमः
१५८. ॐ श्री आदि-लक्ष्म्यै नमः
१५९. ॐ श्री महा-सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः
१६०. ॐ श्री राज-लक्ष्म्यै नमः
१६१. ॐ श्री दिव्य-लक्ष्म्यै नमः
१६२. ॐ श्री सु-श्रियै नमः
१६३. ॐ श्री मङ्गल-देवतायै नमः
१६४. ॐ श्री भक्तिदायै नमः
१६५. ॐ श्री भुक्तिदायै नमः
१६६. ॐ श्री मुक्तिदायै नमः
१६७. ॐ श्री सद्-गति-प्रदायै नमः
१६८. ॐ श्री कीर्तिदायै नमः
१६९. ॐ श्री धनदायै नमः
१७०. ॐ श्री पुत्र-पौत्र-विवर्धिन्यै नमः
१७१. ॐ श्री पद्माननायै नमः
१७२. ॐ श्री पद्मोर्वे नमः
१७३. ॐ श्री पद्माक्ष्यै नमः
१७४. ॐ श्री पद्म-सम्भवायै नमः
१७५. ॐ श्री अश्वदायै नमः
१७६. ॐ श्री गोदायै नमः
१७७. ॐ श्री धनदायै नमः
१७८. ॐ श्री महा-धनायै नमः
१७९. ॐ श्री चन्द्र-सूर्याग्नि-सर्वाभायै नमः
१८०. ॐ श्री जात-वेदास्त्र-संस्थितायै नमः
१८१. ॐ श्री दिग्-गजेन्द्र-समारूढायै नमः
१८२. ॐ श्री दिव्य-भूषण-भूषितायै नमः
१८३. ॐ श्री सर्व-सम्पत्-प्रदायै नमः
१८४. ॐ श्री सर्वार्थ-साधिन्यै नमः

***

श्री-सूक्तम्

ॐ हिरण्य - वर्णां हरिणीं, सुवर्ण - रजत - स्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात - वेदो म आवह।।१
तां म आवह जात - वेदो, लक्ष्मीमनप - गामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं, गामश्वं पुरुषानहम्।।२
अश्व - पूर्वां रथ - मध्यां, हस्ति - नाद - प्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये, श्रीर्मा देवी जुषताम्।।३
कांसोऽस्मि तां हिरण्य-प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्म - वर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।४
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव-जुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि।।५
आदित्य-वर्णे! तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।६
उपैतु मां देव - सखः, कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्, कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।७
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठा, अलक्ष्मीर्नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च, सर्वान् निर्णुद मे गृहात्।।८
गन्ध - द्वारां दुराधर्षां, नित्य - पुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्व - भूतानां, तामिहोपह्वये श्रियम्।।९
मनसः काममाकूतिं, वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य, मयि श्रीः श्रयतां यशः।।१०
कर्दमेन प्रजा - भूता, मयि सम्भव - कर्दम!।
श्रियं वासय मे कुले, मातरं पद्म - मालिनीम्।।११

आपः सृजन्तु स्निग्धानि, चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च - देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।१२
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं, पिङ्गलां पद्म - मालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात - वेदो ममावह।।१३
आर्द्रां यष्करिणीं यष्टिं, सुवर्णां हेम - मालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात - वेदो ममावह।।१४
तां म आवह जात - वेदो लक्ष्मीमनप - गामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।।१५

।।फल-श्रुति।।

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा, जुहुयादाज्यमन्वहम्।
श्रियः पञ्च - दशर्चं च, श्री - कामः सततं जपेत्।।१६

विशेष ज्ञातव्य

■ '**हिरण्य-वर्णां**' से १५ ऋचाओं का '**श्री-सूक्त**' '**ऋग्-वेद**' में आता है। '**यजुर्वेद**' में चार ऋचाओं का '**श्री-सूक्त**' है, जो '**रथे अक्षेषु वृषभस्य**' से प्रारम्भ होता है। इसी प्रकार '**साम-वेद**' में '**श्रयन्तीयं**' इत्यादि और '**अथर्व-वेद**' में '**श्रियं धातुर्मयि धेहि**' इत्यादि रूप से '**श्री-सूक्त**' कथित है। '**ऋग्-वेद**' का '**श्री-सूक्त**' ही सबसे अधिक प्रचलित है, जो भक्तों के लिए '**पुष्टि-वर्द्धक**' है।

■ **ऋग्-वेदोक्त** '**श्री-सूक्त**' की प्रथम ऋचा की ऋषि स्वयं '**लक्ष्मी**' हैं और शेष १४ ऋचाओं में से प्रत्येक के चार ऋषि हैं–१. **आनन्द**, २. **कर्दम**, ३. **चिक्लीत** और ४. **इन्दिरा-सुत**। '**श्री-सूक्त**' की देवता दो हैं–१. **अग्नि** (रुद्र एवं नारायण दोनों की बोधक) और २. **श्री**।

■ '**श्री-सूक्त**' के छन्द के विषय में बताया है कि प्रथम तीन ऋचाओं का छन्द '**अनुष्टुप्**' है। चौथी ऋचा का छन्द है–'**वृहती**', पाँचवीं-छठी का '**त्रिष्टुभ्**', ७ वीं से १४ वीं का '**अनुष्टुभ्**' और अन्तिम १५ वीं ऋचा का छन्द है–'**प्रस्तार-पंक्ति**'।

■ **ऋग्-वेदोक्त** '**श्री-सूक्त**' की **पहली ऋचा** से सम्पदा, **दूसरी ऋचा** से पशु-धन, **तीसरी ऋचा** से अन्न-लाभ, **चौथी ऋचा** से भूमि-लाभ, **पाँचवीं ऋचा** से नौकर-चाकर, **छठवीं ऋचा** से महा-यश, **सातवीं ऋचा** से राजकीय सम्मान, **आठवीं ऋचा** से धैर्य-शक्ति, **नवीं** और **दसवीं ऋचा** से वाहन-सुख, **ग्यारहवीं ऋचा** से वस्त्र, **बारहवीं ऋचा** से पुत्र, **तेरहवीं ऋचा** से रत्न, **चौदहवीं ऋचा** से महत्-सम्मान और **पन्द्रहवीं ऋचा** से प्रचुर मात्रा में अन्न व धन की प्राप्ति होती है।

***

'प्रपञ्च-सार तन्त्र', 'श्री श्रीविद्यार्णव तन्त्र' एवं 'शारदा-तिलक तन्त्र' के अनुसार :

'श्रीसूक्त'-विधान

* प्रस्तुत-कर्ता : पं० मधुसूदन शुक्ल, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

विनियोग:—ॐ हिरण्य-वर्णामित्यादि-पञ्चदशर्चस्य श्रीसूक्तस्याद्याया: ऋच: श्री ऋषि:, तां म आवहेति चतुर्दशानामृचां आनन्द-कर्दम-चिक्लीत-इन्दिरा-सुताश्चत्वार: ऋषय:, आद्य-मन्त्र-त्रयाणां अनुष्टुप् छन्द:, कांसोऽस्मीत्यस्या: चतुर्थ्या वृहती छन्द:, पञ्चम-षष्ठयो: त्रिष्टुप् छन्द:, ततोऽष्टावनुष्टुभ:, अन्त्या प्रस्तार-पंक्ति: छन्द:। श्रीरग्निश्च देवते। हिरण्य-वर्णां बीजं। ''तां म आवह जातवेद'' शक्ति:। ''कीर्तिमृद्धिं ददातु मे'' कीलकम्। मम श्रीमहालक्ष्मी-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोग:।

ऋष्यादि-न्यास:—श्री-आनन्द-कर्दम-चिक्लीत-इन्दिरा-सुतेभ्य: ऋषिभ्यो नम:—शिरसि। अनुष्टुप्-बृहती-त्रिष्टुप्-प्रस्तार-पंक्ति-छन्दोभ्यो नम:—मुखे। श्रीरग्नि-देवताभ्यां नम:—हृदि। हिरण्य-वर्णां-बीजाय नम:—गुह्ये। तां म आवह जातवेद शक्तये नम:—पादयो:। कीर्तिमृद्धिं ददातु मे कीलकाय नम:—नाभौ। मम श्रीमहालक्ष्मी-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नम:—सर्वाङ्गे।

अङ्ग-न्यास:—'श्री-सूक्त' के मन्त्रों में से एक-एक मन्त्र का उच्चारण करते हुए दाहिने हाथ की अँगुलियों से क्रमश: सिर, नेत्र, कान, नासिका, मुख, कण्ठ, दोनों बाहु, हृदय, नाभि, लिङ्ग, पायु (गुदा), उरु (जाँघ), जानु (घुटना), जङ्घा और पैरों में न्यास करें। यथा—

१. ॐ हिरण्य-वर्णां हरिणीं, सुवर्ण-रजत-स्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात-वेदो म आवह ॥ — शिरसि

२. ॐ तां म आवह जात-वेदो, लक्ष्मीमनप-गामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं, गामश्वं पुरुषानहम् ॥ — नेत्रयो:

३. ॐ अश्व-पूर्वां रथ-मध्यां, हस्ति-नाद-प्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये, श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ — कर्णयो:

४. ॐ कांसोऽस्मि तां हिरण्य-प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीं।
पद्मे स्थितां पद्म-वर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ — नासिकायाम्

५. ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव-जुष्टामुदारां।

तां पद्म-नेमिं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥ — मुखे

६. ॐ आदित्य-वर्णे! तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ — कण्ठे

७. ॐ उपैतु मां देव - सखः , कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्, कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे ॥ — बाह्वोः

८. ॐ क्षुत्-पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मींनाशयाम्यहं ।
अभूतिमसमृद्धिं च, सर्वान् निर्णुद मे गृहात् ॥ — हृदये

९. ॐ गन्ध-द्वारां दुराधर्षां, नित्य-पुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्व - भूतानां, तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ — नाभौ

१०. ॐ मनसः काममाकूतिं, वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य, मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥ — लिङ्गे

११. ॐ कर्दमेन प्रजा - भूता, मयि सम्भव - कर्दम !
श्रियं वासय मे कुले, मातरं पद्म-मालिनीम् ॥ — पायौ

१२. ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि, चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ — उर्वोः

१३. ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं, पिङ्गलां पद्म -मालिनीं ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात-वेदो म आवह ॥ — जान्वोः

१४. ॐ आर्द्रां यष्करिणीं यष्टिं, सुवर्णां हेम-मालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात -वेदो म आवह ॥ — जङ्घयोः

१५. ॐ तां म आवह जात - वेदो लक्ष्मीमनप - गामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥ — पादयोः

कर-न्यासः—**ॐ हिरण्य-मय्यै नमः**—अंगुष्ठाभ्यां नमः। **ॐ चन्द्रायै नमः**—तर्जनीभ्यां नमः। **ॐ रजत-स्रजायै नमः**—मध्यमाभ्यां नमः। **ॐ हिरण्य-स्रजायै नमः**—अनामिकाभ्यां नमः। **ॐ हिरण्यायै नमः**—कनिष्ठाभ्यां नमः। **ॐ हिरण्य-वर्णायै नमः**—करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यासः—**ॐ हिरण्य-मय्यै नमः**—हृदयाय नमः। **ॐ चन्द्रायै नमः**—शिरसे स्वाहा। **ॐ रजत-स्रजायै नमः**—शिखायै वषट्। **ॐ हिरण्य-स्रजायै नमः**—कवचाय हुम्। **ॐ हिरण्यायै नमः**—नेत्र-त्रयाय वौषट्। **ॐ हिरण्य-वर्णायै नमः**—अस्त्राय फट्।

दिग्-बन्धन—"ॐ भूर्भुवः स्वरोम्" से दिग्-बन्धन करें।

ध्यान :—या सा पद्मासनस्था विपुल-कटि-तटी पद्म-पत्रायताक्षी,
गम्भीरावर्त्त-नाभि-स्तन-भार-नमिता शुभ्र-वस्त्रोत्तरीया।
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गन्ध-मणि-गण-खचितैः स्नापिता हेम-कुम्भैः,
नित्यं सा पद्म-हस्ता मम वसतु गृहे सर्व-माङ्गल्य-युक्ता॥
अरुण - कमल - संस्था, तद्रजः - पुञ्ज - वर्णा,
कर - कमल-धृतेष्टाभीति-युग्माम्बुजा च।
मणि - मुकुट - विचित्राऽलङ्कृता कल्प - जालैः,
सकल-भुवन-माता, सन्ततं श्रीः श्रियै नः॥

इस प्रकार ध्यान करके **भगवती लक्ष्मी** का '**मानस पूजन**' करें। यथा—

१ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीमहा-लक्ष्मी-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधोमुख-कनिष्ठांगुष्ठ-मुद्रा)। **२ हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमहा-लक्ष्मी-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि** (अधोमुख-तर्जनी-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **३ यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीमहा-लक्ष्मी-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि** (ऊर्ध्व-मुख-तर्जनी-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **४ रं वह्नयात्मकं दीपं श्रीमहा-लक्ष्मी-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि** (ऊर्ध्व-मुख-मध्यमा-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **५ वं अमृतात्मकं नैवद्यं श्रीमहा-लक्ष्मी-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि** (ऊर्ध्व-मुख-अनामा-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **६ शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीमहा-लक्ष्मी-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि** (ऊर्ध्व-मुख-सर्वांगुलि-मुद्रा)।

अब सर्व-देवोपयोगी पद्धति से **अर्घ्य** एवं **पाद्य-आचमनीय आदि पात्रों की स्थापना** करके **पीठ-पूजन** करें।

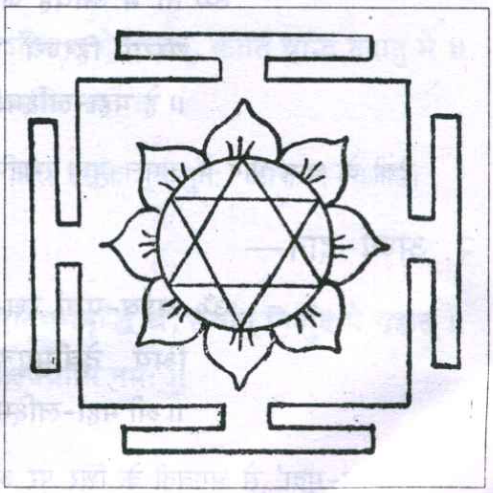

'**सर्वतोभद्र-मण्डल**' आदि (देखें 'हिन्दी तन्त्र-सार', पृष्ठ ७९) पर निम्न '**पूजन-यन्त्र**' की स्थापना करके मण्डूकादि-पर-तत्त्वान्त देवताओं की पूजा करें। तत्पश्चात् पूर्वादि-क्रम से **भगवती लक्ष्मी की 'पीठ-शक्तियों'** की अर्चना करें। यथा—

श्री विभूत्यै नमः, श्री उन्नत्यै नमः, श्री कान्त्यै नमः, श्री सृष्ट्यै नमः, श्री कीर्त्यै नमः, श्री सन्नत्यै नमः, श्री व्युष्ट्यै नमः, श्री उत्कृष्ट्यै नमः।

मध्य में—'श्री ऋद्धयै नमः।'

पुष्पाञ्जलि समर्पित कर मध्य में प्रसून-तूलिका की कल्पना करके—"**श्री सर्व-शक्ति-कमलासनाय नमः**" इस मन्त्र से समग्र '**पीठ**' का पूजन करे।

'**सहस्त्रार**' में **गुरुदेव का पूजन** कर एवं उनसे आज्ञा लेकर पूर्व-वत् पुनः '**षडङ्ग-न्यास**' करे। **भगवती लक्ष्मी** का ध्यान कर **पर-संवित्-स्वरूपिणी तेजो-मयी देवी लक्ष्मी** को नासा-पुट से पुष्पाञ्जलि में लाकर आह्वान करे। यथा—

ॐ देवेशि! भक्ति-सुलभे, परिवार-समन्विते! यावत् त्वां पूजयिष्यामि, तावत् त्वं स्थिरा भव!
हिरण्य-वर्णां हरिणीं, सुवर्ण-रजत-स्त्रजाम्। चन्द्रां हिरण्य-मयीं लक्ष्मीं, जातवेदो ममावह॥

श्री महा-लक्ष्मि! इहागच्छ, इहागच्छ, इह सन्तिष्ठ, इह सन्तिष्ठ, इह सन्निधेहि, इह सन्निधेहि, इह सन्निरुध्वस्व, इह सन्निरुध्वस्व, इह सम्मुखी भव, इह अवगुण्ठिता भव!

आवाहनादि नव मुद्राएँ दिखाकर '**अमृतीकरण**' एवं '**परमीकरण**' करके—"**ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हंसः श्रीमहा-लक्ष्मी - देवतायाः प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हंसः श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायाः जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हंसः श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायाः सर्वेन्द्रियाणि। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हंसः श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायाः वाङ्-मनो-चक्षु-श्रोत्र-घ्राण-प्राण-पदानि इहैवागत्य सुखं चिर तिष्ठन्तु स्वाहा।**" इस **प्राण-प्रतिष्ठा-मन्त्र** से लेलिहान-मुद्रा-पूर्वक प्राण-प्रतिष्ठा करे।

उक्त प्रकार आवाहनादि करके यथोपलब्ध द्रव्यों से **भगवती की राजसी पूजा** करे। यथा—

१. आसन—

ॐ तां म आवह जात-वेदो, लक्ष्मीमनप-गामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं, गामश्वं पुरुषानहम् ॥
॥ हे महा-लक्ष्मि! तुभ्यं पद्मासनं कल्पयामि नमः ॥

देवी के वाम भाग में कमल-पुष्प स्थापित करके 'सिंहासन-मुद्रा' और 'पद्म-मुद्रा' दिखाए।

२. अर्घ्य-दान—

ॐ अश्व-पूर्वां रथ-मध्यां, हस्ति-नाद-प्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये, श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥
॥ श्री महा-लक्ष्मि! एतत् ते अर्घ्यं कल्पयामि स्वाहा ॥

'कमल-मुद्रा' से भगवती के शिर पर अर्घ्य प्रदान करे।

३. पाद्य—

ॐ कांसोस्मि तां हिरण्य-प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्म-वर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥
॥ श्री महा-लक्ष्म्यै पाद्यं कल्पयामि नमः ॥

चरण-कमलों में 'पाद्य' समर्पित करके प्रणाम करे।

४. आचमनीय—

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव-जुष्टामुदाराम् ।
तां पद्म-नेमिं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥
॥ श्री महालक्ष्म्यै आचमनीयं कल्पयामि नमः ॥

मुख में 'आचमन' प्रदान करके प्रणाम करे।

५. मधु-पर्क—

ॐ आदित्य-वर्णे! तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥
॥ श्री महा-लक्ष्म्यै मधुपर्कं कल्पयामि स्वधा। पुनराचमनीयम् कल्पयामि ॥

पुनः 'आचमन' समर्पित करे।

८. स्नान (सुगन्धित द्रव्यों से उद्वर्तन करके 'स्नान' कराए)—

ॐ उपैतु मां देव-सखः, कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्, कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे ॥
॥ श्रीमहा-लक्ष्म्यै स्नानं कल्पयामि नमः ॥

'स्नान' कराकर केशादि मार्जन करने के बाद वस्त्र प्रदान करे। इसके पूर्व पुनः 'आचमन' कराए।

९. वस्त्र—

ॐ क्षुत्-पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् । अभूतिमसमृद्धिं च, सर्वान् निर्णुद मे गृहात् ॥
॥ श्री महा-लक्ष्म्यै वाससी परिकल्पयामि नमः ॥

पुनः 'आचमन' कराए।

१०. आभूषण—

ॐ गन्ध-द्वारां दुराधर्षां, नित्य-पुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्व-भूतानां, तामिहोपह्वये श्रियम्॥

॥ श्री महा-लक्ष्म्यै सुवर्णानि भूषणानि कल्पयामि ॥

११. गन्ध—

ॐ मनसः काममाकूतिं, वाचः सत्यमशीमहि! पशूनां रूपमन्नस्य, मयि श्रीः श्रयतां यशः॥

॥ श्री महा-लक्ष्म्यै गन्धं समर्पयामि नमः ॥

१२. पुष्प—

ॐ कर्दमेन प्रजा-भूता, मयि सम्भव-कर्दम! श्रियं वासय मे गृहे, मातरं पद्म-मालिनीम् ॥

॥ श्री महा-लक्ष्म्यै एतानि पुष्पाणि वौषट् ॥

१३. धूप—

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि, चिक्लीत वस मे गृहे । नि च देवीं मातरं, श्रियं वासय मे कुले॥

ॐ वनस्पति-रसोद्भूतः, गन्धाढ्यो गन्धः उत्तमः। आघ्रेयः सर्व-देवानां, धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

॥ श्री महा-लक्ष्म्यै धूपं आघ्रापयामि नमः ॥

१४. दीप—

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं, पिङ्गलां पद्म-मालिनीम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात-वेदो ममावह ॥

ॐ सुप्रकाशो महा-दीपः, सर्वतः तिमिरापहः। स बाह्याभ्यन्तर-ज्योतिः, दीपोऽयं प्रति-गृह्यताम् ॥

॥ श्री महा-लक्ष्म्यै प्रदीपं दर्शयामि नमः ॥

'दीपक' दिखाकर प्रणाम करे। पुनः 'आचमन' कराए।

१५. नैवेद्य—देवी के समक्ष '**चतुरस्त्र-मण्डल**' बनाकर उस पर '**त्रिपादिका-आधार**' स्थापित करे। षट्-रस व्यञ्जन-युक्त '**नैवेद्य-पात्र**' उस आधार पर रखें। '**वायु-बीज**' (यं) से नैवेद्य के दोषों को सुखाकर, '**अग्नि-बीज**' (रं) से उनका दहन करे। '**सुधा-बीज**' (वं) से नैवेद्य का '**अमृतीकरण**' करें। बाँएँ हाथ के अँगूठे से '**नैवेद्य-पात्र**' को स्पर्श करते हुए दाहिने हाथ में सुसंस्कृत अमृत-मय जल-पात्र लेकर '**नैवेद्य**' समर्पित करें—

ॐ आर्द्रां यष्करिणीं यष्टिं, सुवर्णां हेम-मालिनीम् । सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात-वेदो ममावह ॥

ॐ सत्पात्र-सिद्धं सुहविः, विविधानेक-भक्षणम् । नैवेद्यं निवेदयामि, सानुगाय गृहाण तत् ॥

॥ श्री महा-लक्ष्म्यै नैवेद्यं निवेदयामि नमः ॥

चुलूकोदक (दाईं हथेली में जल) से 'नैवेद्य' समर्पित करें।

दूसरे पात्र में 'अमृतीकृत' जल लेकर "**ॐ हिरण्य-वर्णाम्**"—इस प्रथम ऋचा का पाठ करके—"**श्री महा-लक्ष्म्यै अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा**"। **श्री महा-लक्ष्मि! अपोशनं कल्पयामि स्वाहा।**

तत्पश्चात् "**प्राणाय स्वाहा**" आदि का उच्चारण करते हुए '**पञ्च प्राण-मुद्राएँ** दिखाएँ। "**हिरण्य-वर्णाम्**"— इस प्रथम ऋचा का दस बार पाठ करके समर्पित करें। फिर '**उत्तरापोशन**' कराएँ। '**नैवेद्य-मुद्रा**' दिखाकर प्रणाम करें। '**नैवेद्य-पात्र**' को ईशान या उत्तर दिशा में रक्खें। **नैवेद्य-स्थान** को जल से साफ कर ताम्बूल प्रदान करें।

१६. ताम्बूल—

ॐ तां म आवह जात-वेदो लक्ष्मीमनप-गामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥
॥ श्री महा-लक्ष्मि! ऐं हं हं हं इदम् ताम्बूलं गृहाण, स्वाहा ॥

'ताम्बूल' देकर प्रणाम करे।

आवरण-पूजा

भगवती से उनके परिवार की अर्चना हेतु अनुमति माँग कर '**आवरण-पूजा**' करे। यथा—

ॐ संविन्मयि! परे देवि! परामृत-रस-प्रिये! अनुज्ञां देहि मे मातः! परिवारार्चनाय ते ॥

प्रथम आवरण—केसरों में '**षडङ्ग-शक्तियों**' का पूजन करे—

१. हिरण्य-मय्यै नमः हृदयाय नमः। हृदय-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२. चन्द्रायै नमः शिरसे स्वाहा। शिरः-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३. रजत-स्रजायै नमः शिखायै वषट्। शिखा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४. हिरण्य-स्रजायै नमः कवचाय हुम्। कवच-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

५. हिरण्यायै नमः नेत्र-त्रयाय वौषट्। नेत्र-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

६. हिरण्य-वर्णायै नमः अस्त्राय फट्। अस्त्र-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

प्रथम आवरण की पूजा कर फल भगवती को समर्पित करें। यथा—

ॐ अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि, शरणागत-वत्सले!
भक्त्या समर्पये तुभ्यं, प्रथमावरणार्चनम्॥ पूजिताः तर्पिताः सन्तु महा-लक्ष्म्यै नमः॥

'पुष्पाञ्जलि' प्रदान करे।

द्वितीय आवरण—पत्रों में पूर्व से प्रारम्भ करके वामावर्त-क्रम से '**पद्मा, पद्म-वर्णा, पद्मस्था, आर्द्रा, तर्पयन्ती, तृप्ता, ज्वलन्ती**' एवं '**स्वर्ण-प्राकारा**' का पूजन-तर्पण करे। यथा—

१. पद्मायै नमः। पद्मा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२. पद्म-वर्णायै नमः। पद्म-वर्णा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३. पद्मस्थायै नमः। पद्मस्था-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४. आर्द्रायै नमः। आर्द्रा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

५. तर्पयन्त्यै नमः। तर्पयन्ती-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

६. तृप्तायै नमः। तृप्ता-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

७. ज्वलन्त्यै नमः। ज्वलन्ती-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

८. स्वर्ण-प्राकारायै नमः। स्वर्ण-प्राकारा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

द्वितीय आवरण का पूजन-फल भगवती को समर्पित करके तृतीय आवरण-पूजन करे। यथा—

ॐ अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि, शरणागत-वत्सले!
भक्त्या समर्पये तुभ्यं, द्वितीयावरणार्चनम्॥ पूजिताः तर्पिताः सन्तु महा-लक्ष्म्यै नमः॥

तृतीय आवरण—भू-पुर में इन्द्र आदि दिक्-पालों का पूजन-तर्पण करे। यथा—

लं इन्द्राय नमः—पूर्वे। **रं अग्नये नमः** — अग्नि-कोणे। **यं यमाय नमः** — दक्षिणे। **क्षं निर्ऋतये नमः** — नैर्ऋत-कोणे। **वं वरुणाय नमः** — पश्चिमे। **यं वायवे नमः** — वायु-कोणे। **सं सोमाय नमः** — उत्तरे। **हां ईशानाय नमः** — ईशान-कोणे। **आं ब्रह्मणे नमः** — इन्द्र और ईशान के बीच। **ह्रीं अनन्ताय नमः** — वरुण और निर्ऋति के बीच।

पूर्व-वत् तृतीय आवरण-अर्चन भगवती को समर्पित करें। यथा—

ॐ अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि, शरणागत-वत्सले!
भक्त्या समर्पये तुभ्यं, तृतीयावरणार्चनम्॥ पूजिताः तर्पिताः सन्तु महा-लक्ष्म्यै नमः॥

चतुर्थ आवरण—इन्द्रादि दिग्पालों के समीप ही उनके 'वज्र' आदि आयुधों का अर्चन करें। यथा—

वं वज्राय नमः। **शं** शक्तये नमः। **दं** दण्डाय नमः। **खं** खड्गाय नमः। **पं** पाशाय नमः। **ध्वं** ध्वजाय नमः। **गं** गदायै नमः। **त्रिं** त्रिशूलाय नमः। **पं** पद्माय नमः। **चं** चक्राय नमः।

पूर्व-वत् चतुर्थ आवरण-अर्चन भगवती को समर्पित करें। यथा—

ॐ अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि, शरणागत-वत्सले!
भक्त्या समर्पये तुभ्यं, चतुर्थावरणार्चनम्॥ पूजिताः तर्पिताः सन्तु महा-लक्ष्म्यै नमः॥

प्रथम-ऋचा से कर्णिका में **महा-देवी महा-लक्ष्मी का पुष्प-धूप-गन्ध, दीप** और **नैवेद्य आदि उपचारों से पुनः पूजन** करें।

तत्पश्चात् **पूजा-यन्त्र** में देवी के समक्ष **गन्ध-पुष्प-अक्षत** से **भगवती के ३२ नामों से पूजन-तर्पण** करें।

१. ॐ श्रियै नमः। श्री-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२. ॐ लक्ष्म्यै नमः। लक्ष्मी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३. ॐ वरदायै नमः। वरदा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४. ॐ विष्णु-पत्न्यै नमः। विष्णु-पत्नी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

५. ॐ वसु-प्रदायै नमः। वसु-प्रदा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

६. ॐ हिरण्य-रूपिण्यै नमः। हिरण्य-रूपिणी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

७. ॐ स्वर्ण-मालिन्यै नमः। स्वर्ण-मालिनी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

८. ॐ रजत-स्त्रजायै नमः। रजत-स्त्रजा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

९. ॐ स्वर्ण-गृहायै नमः। स्वर्ण-गृहा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

१०. ॐ स्वर्ण-प्राकारायै नमः। स्वर्ण-प्राकारा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

११. ॐ पद्म-वासिन्यै नमः। पद्म-वासिनी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

१२. ॐ पद्म-हस्तायै नमः। पद्म-हस्ता-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

१३. ॐ पद्म-प्रियायै नमः। पद्म-प्रिया-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

१४. ॐ मुक्तालङ्कारायै नमः। मुक्तालङ्कारा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

१५. ॐ सूर्यायै नमः। सूर्या-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

१६. ॐ चन्द्रायै नमः। चन्द्रा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

१७. ॐ बिल्व-प्रियायै नमः। बिल्व-प्रिया-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

१८. ॐ ईश्वर्यै नमः। ईश्वरी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

१९. ॐ भुक्त्यै नमः। भुक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२०. ॐ प्रभुक्त्यै नमः। प्रभुक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२१. ॐ विभूत्यै नमः। विभूति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२२. ॐ ऋद्ध्यै नमः। ऋद्धि-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२३. ॐ समृद्ध्यै नमः। समृद्धि-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२४. ॐ तुष्ट्यै नमः। तुष्टि-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२५. ॐ पुष्ट्यै नमः। पुष्टि-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२६. ॐ धनदायै नमः। धनदा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२७. ॐ धनेश्वर्यै नमः। धनेश्वरी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२८. ॐ श्रद्धायै नमः। श्रद्धा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२९. ॐ भोगिन्यै नमः। भोगिनी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३०. ॐ भोगदायै नमः। भोगदा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३१. ॐ धात्र्यै नमः। धात्री-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३२. ॐ विधात्र्यै नमः। विधात्री-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

उपर्युक्त ३२ नामों से भगवती के निमित्त हविष्य 'बलि' प्रदान करने का भी विधान है।

'**श्री-सूक्त**' की पन्द्रह ऋचाओं से **नीराजन** और **प्रदक्षिणा** करके पुष्पाञ्जलि प्रदान करे। तदुपरान्त पुनः **न्यास** करके "**श्री-सूक्त**" का पाठ करे। '**क्षमापन-स्तोत्र**' का पाठ करके पूजन और पाठ का फल भगवती को समर्पित करके विसर्जन करे।

विशेष—पुरश्चरण-काल में और बाद में भी प्रति-दिन सूर्योदय के समय जलाशय में स्नान करके **सूर्य-मण्डलस्था भगवती महा-लक्ष्मी** का उपर्युक्त ३२ नामों से **तर्पण** करना '**श्री-सूक्त**' के साधकों के लिए आवश्यक है।

पुरश्चरण-विधान—"**श्री-सूक्त**" का पुरश्चरण किसी भी प्रशस्त मास के **शुक्ल पक्ष** की **प्रतिपदा** से एकादशी तक किए जाने का विधान है। "**पुरश्चरण**" के लिए **१२ हजार पाठ** किया जाना चाहिए। **प्रपञ्च-सार** (पटल १२, श्लोक ४३) में भी कहा गया है—"**एकादश्याम् परिसमाप्यार्क साहस्त्रिकान्तं**" प्रतिपदा से एकादशी तक १२ हजार पाठ करना चाहिए।

उक्त ११ दिनों में **श्री-सूक्त** की **१२ हजार आवृत्तियाँ** असम्भव और अशक्य हैं। इसकी व्याख्या करते हुए "**श्रीश्री विद्यार्णव-तन्त्र**" (२२/१८) में कहा गया है कि यहाँ **१२ हजार 'जप'** का जो विधान है, उसका तात्पर्य "**सम्पूर्ण श्री-सूक्त**" की **१२ हजार आवृत्तियाँ** नहीं, अपितु **श्री-सूक्त की १५ ऋचाओं की १२ हजार आवृत्तियों** से है। **सम्पूर्ण श्री-सूक्त का ८०० (आठ सौ) बार पाठ करने से १५ ऋचाओं की** (८०० × १५ = १२,०००) **बारह हजार आवृत्तियाँ** हो जाती हैं।

श्री-सूक्त का ८०० (आठ सौ) पाठ करने की विधि इस तरह है। **पहिले ८ दिनों** तक **प्रति-दिन ७३ (तिहत्तर) पाठ** करें, फिर **३ दिनों** तक **प्रति-दिन ७२ (बहत्तर) पाठ** करें। इस तरह **८ दिनों में ५८४** और **तीन दिनों में २१६ पाठ** होंगे। **सम्पूर्ण श्री-सूक्त** की **८०० आवृत्तियाँ** करने से **सम्पूर्ण ऋचाओं की कुल पाठ/जप-संख्या ८०० × १५ = १२,००० होगी।**

हवन—द्वादशी को **हवन** और **ब्राह्मण-भोजन** कराएँ।

हवन-सामग्री—(१) **त्रि-मधुर** (घी, शहद, शर्करा)-**प्लुत पद्म**, (२) **बिल्व**-समिध, (३) **क्षीरान्न** (खीर) और (४) **सर्पिष**। इन चार द्रव्यों से पृथक्-पृथक् **तीन-तीन सौ** अर्थात् कुल **१२०० आहुतियाँ** प्रदान करके **हवन** करें।

श्री-सूक्त की **पन्द्रह ऋचाओं की २० (बीस) आवृत्तियाँ** करते हुए **हवन** करने से **तीन सौ आहुतियाँ** प्रत्येक द्रव्य की हो जाती हैं। इस तरह उपर्युक्त **चार द्रव्यों से हवन** करने के लिए **श्री-सूक्त की बीस-बीस आवृत्तियों** के क्रम से **चार बार आवृत्ति** करनी होगी। इस प्रकार **हवन** के लिए **श्री-सूक्त** की कुल २० × ४ = ८० **आवृत्तियाँ** होंगी।

(**श्री-सूक्त** की **८०० आवृत्तियाँ** करने से ऋचाओं का कुल ८०० × १५ = १२,००० (**बारह हजार**) **जप/ पाठ** हुआ था। ८०० का दशांश ८०। इस तरह **हवन** की संख्या ८० × १५ = १,२०० (एक हजार दो सौ हुई)।

ब्राह्मण-भोजन—द्वादशी के दिन ही **हवन** के बाद १२ (बारह) सत्पात्र-सदाचारी-लक्ष्मी-भक्त ब्राह्मणों को भोजन कराएँ। गुरुदेव एवं ब्राह्मणों को यथा-शक्ति **दक्षिणा** देकर सन्तुष्ट करें।

प्रयोग :— १. **श्री-सूक्त** के **१५ मन्त्रों** और उपर्युक्त **३२ नामों** से प्रति-दिन **'घी' से हवन** करने पर ६ मास में **भगवती लक्ष्मी की कृपा** प्राप्त होती है।

२. **शुक्ल-पक्ष** की **प्रतिपदा** से प्रारम्भ करके प्रति-दिन **''कांसोस्मीति०''** इस ऋचा का **एक सौ आठ बार जप** करके **'घी' से ग्यारह (११) बार हवन** करे। इस प्रयोग से ६ मास में **महती सम्पत्ति की प्राप्ति** होती है।

३. स्नान के समय **श्री-सूक्त** के मन्त्रों से **जल-ग्रहण** करे। उस **जल को तीन बार अभिमन्त्रित** करके उससे तीन बार अपना **अभिषिञ्चन** करे। फिर सूर्य की ओर मुँह करके **तीन बार श्री-सूक्त का तीन बार जप** करे। फिर **तीन बार तर्पण** करे। **सूर्य-नारायण की पूजा** करके हविष्यान्न से **प्रति-दिन हवन** करे। ६ मास में **महती लक्ष्मी की प्राप्ति** होती है।

४. प्रत्येक **शुक्रवार** को १०८ अधखिले कमल लाकर उनमें **नवनीत (मक्खन)** भरे। **अन्तिम ऋचा का पाठ** करते हुए इन कमलों से **हवन** करे। **४४ शुक्रवारों** तक यह प्रयोग करने से चञ्चला लक्ष्मी **'अचञ्चला'** हो जाती हैं।

विधि-निषेध—पुरश्चरण/ प्रयोग-काल में साधक शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण करे। शरीर पर हल्दी का लेप न लगाए। द्रोण पुष्प, कमल, बिल्व-पुष्प धारण न करे। नग्न होकर जल में प्रवेश न करे। शुद्ध शय्या पर शयन करे। उच्छिष्ट मुँह और तेल लगाकर जप/पूजा न करे। नीच व्यक्तियों का स्पर्श/सम्पर्क न करे।

'श्री सूक्त' के प्रयोग

(१)

श्रीं ह्रीं क्लीं॥ हिरण्य-वर्णां हरिणीं, सुवर्ण-रजत-स्त्रजाम् ।

चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात-वेदो म आवह॥ श्रीं ह्रीं क्लीं

स्वर्ण से **लक्ष्मी की मूर्ति** बनाकर उस मूर्ति का **पूजन** हल्दी और **सुवर्ण-चाँदी के कमल-पुष्पों से** करे। फिर **सुवासिनी-सौभाग्यवती स्त्री** और **गाय का पूजन** कर, **पूर्णिमा के चन्द्र** में अथवा **जल से भरे हुए कुम्भ में श्रीपरा-नारायणी का ध्यान** कर, **सोने की माला** से **कमल-पत्र के आसन** पर बैठकर, '**श्री-सूक्त**' की उक्त '**हिरण्य-वर्णां०**' ऋचा में '**श्रीं ह्रीं क्लीं**' बीज जोड़कर **प्रातः, दोपहर** और **सायं एक-एक हजार (दस-दस माला) जप** करे। इस प्रकार **एक लाख पचीस हजार 'जप'** होने पर **मधु** और **कमल-पुष्प** से दशांश '**होम**' करे और '**तर्पण**', '**मार्जन**' तथा '**ब्राह्मण-भोजन**' नियम से करे।

इस 'प्रयोग' का '**पुरश्चरण**' **३२ लाख 'जप'** का है। सवा लाख का '**जप**' व '**होम**' हो जाने पर, दूसरे सवा लाख का '**जप**' प्रारम्भ करे। ऐसे कुल **२६ प्रयोग** करने पर **३२ लाख का प्रयोग** सम्पूर्ण होता है। इस '**प्रयोग**' का फल राज-वैभव, सुवर्ण, रत्न, वैभव, विलास, वाहन, स्त्री, सन्तान और सब प्रकार के सांसारिक सुख की प्राप्ति है। पहिला '**प्रयोग**' पूर्ण होने से लाभ होने लगेगा। व्यापार, उद्यम, नौकरी-धन्धा, राज-कार्य आदि में विविध लाभ होने लगेगा। कर्ता और उसके कुटुम्बी-जनों को १०० वर्ष से अधिक आयुष्य मिलकर अन्त में उत्तम लोक की प्राप्ति होती है।

* * *

(२)

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्म्यै नमः॥

दुर्गे ! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।

ॐ ऐं हिरण्य-वर्णां हरिणीं, सुवर्ण-रजत-स्त्रजाम् ।

चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात-वेदो म आवह॥

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽर्द्र - चित्ता ॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्म्यै नमः ॥

यह '**श्री-सूक्त**' का एक मन्त्र सम्पुटित हुआ। इस प्रकार '**तां म आवह**' से लेकर '**यः शुचिः**' तक के १६ मन्त्रों को सम्पुटित कर पाठ करने से **१ पाठ** हुआ। ऐसे **१२ हजार पाठ** करे। **चम्पा का फूल, शहद, घृत, गुड़** का १२०० पाठ से **होम**, १२० पाठ से **तर्पण**, १२ पाठ से **मार्जन** और यथा-शक्ति ब्रह्म-भोजन करे। इस '**प्रयोग**' से धन-धान्य, ऐश्वर्य, समृद्धि, वचन-सिद्धि प्राप्त होती है।

* * *

(३)

ॐ ऐं ॐ ह्रीं॥ तां म आवह जात-वेदो, लक्ष्मीमनप-गामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं, गामश्वं पुरुषानहम् ॥ ॐ ऐं ॐ ह्रीं

लक्ष्मी की स्वर्ण की मूर्ति बनाकर, हल्दी और **स्वर्ण-रौप्य के कमल-पुष्पों** से पूजन करे। **सुवासिनी स्त्री** और **गाय का पूजन** करे। **पूर्णिमा के चन्द्र** में अथवा **जल से भरे हुए कुम्भ** में **श्रीनारायणी का ध्यान** कर **सोने की माला** से **कमल के आसन** पर बैठकर '**जप**' करे। नित्य **सायं-काल एक हजार** '**जप**' करे। कुल **३२ दिन का** '**प्रयोग**' है। दशांश **होम, तर्पण, मार्जन, ब्रह्म-भोजन** करे। माँ लक्ष्मी स्वप्न में आकर धन के स्थान या धन-प्राप्ति के जो साधन अपने चित्त में होंगे, उनकी सफलता का मार्ग बताएँगी। धन-समृद्धि स्थिर रहेगी। प्रत्येक तीन वर्ष के अन्तराल में यह '**प्रयोग**' ३२ दिन तक करने से जीवन भर लक्ष्मी की न्यूनता न रहेगी और स्त्री, सन्तान, परिवार सुखी होंगे।

* * *

(४)

ॐ ह्रीं ॐ श्रीं॥ अश्व-पूर्वां रथ-मध्यां, हस्ति-नाद-प्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये, श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ ॐ ह्रीं ॐ श्रीं

उक्त मन्त्र का **प्रातः, मध्याह्न** और **सायं** प्रत्येक काल **१०-१० माला** '**जप**' करे। सङ्कल्प, न्यास, ध्यान कर '**जप**' का प्रारम्भ करे। इस प्रकार ४ वर्ष करने से मन्त्र सिद्ध होता है। खोया हुआ या शत्रुओं द्वारा छीना हुआ धन प्राप्त होता है। '**प्रयोग**' का 'पुरश्चरण' **३६ लाख मन्त्र-जप** का है। स्वयं न कर सके, तो विद्वान् ब्राह्मणों द्वारा कराया जा सकता है।

* * *

(५)

करोतु सा नः शुभ हेतुरीश्वरी, शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।
अश्व-पूर्वां रथ-मध्यां, हस्ति - नाद-प्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये, श्रीर्मा देवी जुषताम्॥
करोतु सा नः शुभ हेतुरीश्वरी, शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।

उक्त आधे मन्त्र का सम्पुट कर **१२ हजार जप** करे। दशांश **होम-तर्पण-मार्जन-ब्राह्मण-भोजन** करे। इससे धन, ऐश्वर्य, यश बढ़ता है। शत्रु वश में होते हैं। खोई हुई लक्ष्मी, सम्पत्ति पुनः प्राप्त होती है।

* * *

(६)

ॐ श्रीं ॐ क्लीं॥ कांसोऽस्मि तां हिरण्य-प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्म-वर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ॐ श्रीं ॐ क्लीं

उक्त मन्त्र का पुरश्चरण **आठ लाख 'जप'** का है। **प्रातः, सायं** या **प्रातः, मध्याह्न, सायं** या **प्रातः** अनुकूल समयानुसार **'जप'** करे। **'जप'** पूर्ण होने पर **पलाश, ढाक की समिधा, दूध** और **गाय के घी** से दशांश **'होम'** करे और उससे दशांश **तर्पण, मार्जन, ब्रह्म-भोजन** करे। नित्य प्रातः एक ही समय **'जप'** किया जाता हो, तो **अमावास्या के दिन ५ हजार 'जप'** करे। इस **'प्रयोग'** से सभी प्रकार की समृद्धि और श्रेय मिलता है। शत्रुओं का क्षय होता है।

* * *

(७)

सर्वा-बाधा-प्रशमनं, त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि! एवमेव त्वया कार्यमस्मद्-वैरि-विनाशनम् ॥
कांसोऽस्मि तां हिरण्य-प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्म - वर्णां, तामिहोपह्वये श्रियम् ॥
सर्वा-बाधा-प्रशमनं, त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि! एवमेव त्वया कार्यमस्मद्-वैरि-विनाशनम् ॥

उक्त सम्पुट का **१२ लाख 'जप'** करे। ब्राह्मण द्वारा कराया जा सकता है। इससे गत वैभव पुनः प्राप्त होता है और धन-धान्य-समृद्धि, ऐश्वर्य मिलते हैं। शत्रुओं का पराभव भी होता है।

* * *

(८)

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं॥ कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद महा-लक्ष्म्यै नमः॥
दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।
कांसोऽस्मि तां हिरण्य-प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्म - वर्णां, तामिहोपह्वये श्रियम् ॥
दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता!!
कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद महा-लक्ष्म्यै नमः॥ ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं

उक्त प्रकार से सम्पुटित मन्त्र का **१२ हजार 'जप'** करे। इस प्रयोग से वैभव, लक्ष्मी, सम्पत्ति, वाहन, घर, स्त्री, सन्तान का लाभ मिलता है।

* * *

(९)

ॐ क्लीं ॐ वद-वद॥ चन्द्रां प्रभासा यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव - जुष्टामुदाराम् ।

तां पद्म-नेमिं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥ ॐ क्लीं ॐ वद-वद

उक्त मन्त्र का **सङ्कल्प, न्यास, ध्यान** कर **एक लाख पैतीस हजार 'जप'** करना चाहिए। गाय के गोबर से लिपे हुए स्थान पर बैठकर नित्य **एक हजार 'जप'** करना चाहिए। यदि शीघ्र सिद्धि प्राप्त करना हो, तो **प्रातः, मध्याह्न** और **सायं** तीनों काल **एक-एक हजार** जपे। अथवा ब्राह्मणों के द्वारा **'प्रयोग'** करावे। **४५ हजार** पूर्ण होने पर दशांश **होम, तर्पण, मार्जन, ब्रह्म-भोजन** करे। **सौभाग्यवती स्त्रियों का पूजन** करे। देवी की मूर्ति का **कमल-पुष्पों से पूजन** कर, गौओं को घास खिलाए। इस **'प्रयोग'** से दरिद्र मनुष्य धनवान् होता है और खोई हुई धन, सम्पत्ति, जमीन आदि प्राप्त होती हैं। **'ध्यान'** इस प्रकार है—

अक्षीण-भासां चन्द्राख्यां, ज्वलन्तीं यशसा श्रियम् ।

देव - जुष्टामुदारां च , पद्मिनीमीं भजाम्यहम् ॥

* * *

(१०)

ॐ वद वद वाग्वादिनि॥ आदित्य-वर्णे! तपसोऽधिजातो, वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।

तस्य फलानि तपसा नुदन्तु , मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ ॐ वद वद वाग्वादिनि

देवी की **स्वर्ण की प्रतिमा (मूर्ति)** बनवाए। **चन्दन, पुष्प, बिल्व-पत्र, हल्दी, कुमकुम** से उसका पूजन कर **एक से तीन हजार** तक उक्त मन्त्र का **'जप'** करे। कुल **११,००,००० ग्यारह लाख** का **'प्रयोग'** है। **'जप'** पूर्ण होने पर **बिल्व-पत्र, घी, खीर** से दशांश **होम, तर्पण, मार्जन, ब्रह्म-भोजन** करे। यह प्रयोग ब्राह्मण द्वारा भी कराया जा सकता है। **'ऐं क्लीं सौः ऐं श्रीं'**—इन बीजों से **कर-न्यास** और **हृदयादि-न्यास** करे। **'ध्यान'** इस प्रकार करे—

उदयादित्य-सङ्काशां, बिल्व-कानन-मध्यगाम् ।

तनु-मध्यां श्रियं ध्यायेदलक्ष्मी-परिहारिणीम् ॥

'प्रयोग' - काल में फल और दूध का आहार करे। पकाया हुआ पदार्थ न खाए। पके हुए बिल्व-फल फलाहार में खाए जा सकते हैं। यदि सम्भव हो, तो **बिल्व-वृक्ष** के नीचे बैठकर **'जप'** करे। इस प्रयोग से 'वाक्-सिद्धि' होती है और लक्ष्मी स्थिर होकर घर में रहती है। निर्धनता, दरिद्रता, क्लेश, क्षुद्र सत्त्वों का उपद्रव, भूत, प्रेत, पिशाच आदि की पीड़ा नष्ट होती है और मनुष्य धनवान् बनता है।

* * *

(११)

ज्ञानिनामपि चेतांसि, देवी भगवती हि सा। बलादाकृष्य मोहाय, महा-माया प्रयच्छति॥
आदित्य-वर्णे तपसोऽधिजातो, वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु, मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥
ज्ञानिनामपि चेतांसि, देवी भगवती हि सा। बलादाकृष्य मोहाय, महा-माया प्रयच्छति॥

उक्त मन्त्र का १२,००० '**तप**' कर दशांश **होम, तर्पण** आदि करे। इस प्रयोग से जिस वस्तु की या जिस मनुष्य की इच्छा हो, उसका आकर्षण होता है और वह अपने वश में रहता है। राजा या राज्य-कर्ताओं को वश करने के लिए ४८,००० '**जप**' करना चाहिए और तद्दशांश '**होम**' आदि करना चाहिए।

* * *

(१२)

ॐ वाग्-वादिनी ॐ ऐं। उपैतु मां देवसखः, कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् , कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे ॥ ॐ वाग्-वादिनी ॐ ऐं

उक्त मन्त्र का ३२,२०,००० बत्तीस लाख, बीस हजार '**जप**' करे। "**ॐ अस्य श्री-सूक्तस्य 'उपैतु मां०' मन्त्रस्य कुबेर ऋषिः, मणि-मालिनी लक्ष्मीः देवता, अनुष्टुप् छन्दः, श्री ब्लूं क्लीं बीजानि ममाभीष्ट-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**" इस प्रकार '**विनियोग**', '**ऋष्यादि-न्यास**' कर '**आं ह्रीं क्रों ऐं श्रीं आं ह्रं क्रौं ऐं**' इन ९ बीजों से '**कर-न्यास**' एवं '**हृदयादि-न्यास**' करे। '**ध्यान**' इस प्रकार करे—

राज-राजेश्वरीं लक्ष्मीं, वरदां मणि-मालिनीं। देवीं देव-प्रियां कीर्त्तिं, वन्दे काम्यार्थ-सिद्धये॥

मणि-मालिनी लक्ष्मी देवी की **स्वर्ण की मूर्ति** बनाकर **दूर्वा, बिल्व-पत्र, हल्दी, अक्षत, मोती, केवड़ा, चन्दन, पुष्प आदि से पूजन** करे। '**श्री ललिता-सहस्त्रनाम-स्तोत्र**' के प्रत्येक नाम के साथ '**श्रीं**'-बीज लगाकर पूजन करे। सन्ध्यादि नित्य-कर्म कर '**प्रयोग**' का प्रारम्भ करे। **घी का दीप** और **गूगल का धूप** करे। द्राक्षा, खजूर, केले, ईख, शहद, घी, दाड़िम, केरी, नारियल आदि जो प्राप्त हो, नैवेद्य में दे। प्रातः और मध्याह्न में १,००० और रात्रि में २,००० **नित्य जप** करे। ढाई साल में एक व्यक्ति **बत्तीस लाख बीस हजार का जप** पूर्ण कर सकता है। जप करने के लिए **प्रवाल की माला** ले। 'जप' पूर्ण होने पर **अपामार्ग की समिधा, घृत, खीर से दशांश होम** कर **मार्जन** और **ब्रह्म-भोज** करे।

८ **लाख का होम** करने के लिए आवश्यक ब्राह्मणों को बिठाकर, निर्दिष्ट दिन-पर्यन्त '**होम**' करके '**पूर्णाहुति**' करे। होम का कार्य जब तक चले, प्रति-दिन सौभाग्यवती स्त्रियों और गौओं का पूजन कर, उनका वस्त्र आदि से सत्कार कर मिष्ठ भोजन करावे। इस प्रयोग से **कुबेर** आदि देव साक्षात् या स्वप्न में दर्शन देते हैं और धन, सुवर्ण, रत्न, रसायन, औषधि, दिव्याञ्जन आदि देते हैं।

यदि एक ही व्यक्ति यह '**प्रयोग**' करे, तो रात्रि के समय २,००० या उससे ज्यादा भी '**जप**' कर सकता है अथवा कई ब्राह्मणों द्वारा '**जप**' कराने से प्रयोग शीघ्र पूर्ण होता है।

* * *

(१३)

ॐ ऐं ॐ सौः। क्षुत् - पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च , सर्वान् निर्णुद मे गृहात् ॥ ॐ ऐं ॐ सौः

उक्त मन्त्र का ३२,००० बत्तीस हजार '**जप**' करे। प्रति-दिन रात्रि में ३,००० तीन हजार '**जप**' **वीरासन से बैठकर** करे। '**अग्नि-होत्र कुण्ड**' के सम्मुख बैठकर '**जप**' करने से विशेष फल मिलता है। **रुद्राक्ष की माला** से '**जप**' करे। **तिल, गुड़** और **घी से दशांश होम** तथा **तर्पण, मार्जन, ब्रह्म-भोज** करावे। '**प्रयोग**' में नीचे लिखे हुए मन्त्र से 'ध्यान' करे—

खड्गं स-वात - चक्रं च, कमलं वरमेव च। करैश्चतुर्भिर्विभ्राणां, ध्याये चन्द्राननां श्रियम् ॥

एक '**अनुष्ठान**' दस दिन में पूर्ण होगा। पीछे दूसरा '**अनुष्ठान**' प्रारम्भ करे। '**अनुष्ठान**' का प्रभाव पहले '**अनुष्ठान**' से ही दिखाई देगा। जैसे-जैसे दूसरे, तीसरे '**अनुष्ठान**' होंगे, वैसे-वैसे कार्य-सिद्धि होगी। चार '**अनुष्ठान**' पूर्ण होने पर अभिलाषा पूर्ण होगी। कार्य की महत्ता के अनुसार '**अनुष्ठान**' करे। इस प्रयोग से शत्रु का या बिना कारण हानि पहुँचानेवाले का नाश होगा और दरिद्रता, निर्धनता, रोग, भय, जनपद-विध्वंसकारी दैवी तत्त्वों की पीड़ा आदि नष्ट होकर '**प्रयोग**' करनेवाला अपने कुटुम्ब के साथ दीर्घायुषी और ऐश्वर्यवान होता है। ग्रह-दोषों का अनिष्ट फल, कारण और क्षुद्र सत्वों की पीड़ा आदि नष्ट होकर भाग्योदय होता है।

* * *

(१४)

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा, रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणाम्, त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति॥
क्षुत्-पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहं। अभूतिमसमृद्धिं च, सर्वान् निर्णुद् मे गृहात् ॥
रोगानशेषानपहंसि तुष्टा, रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणाम्, त्वामाश्रितां ह्याश्रयतां प्रयान्ति॥

उक्त मन्त्र का १,००० '**जप**' रात्रि में करे। २,००० '**जप**' होने पर दशांश होम—काले तिल, सुपाड़ी, राई से करे। दशांश **तर्पण, मार्जन** आदि करे। शत्रु के विनाश के लिए, रोगों की शान्ति के लिए और विपत्तियों के निवारण के लिए यह उत्तम प्रयोग है। शत्रु-नाश के लिए रीठे के बीज की माला से काले ऊन के आसन पर '**वीरासन**' - **मुद्रा** से बैठकर '**क्रोध**' - **मुद्रा** से जप करे।

* * *

(१५)

ॐ सौः ॐ हंसः। गन्ध - द्वारां दुराधर्षां, नित्य-पुष्टां करीषिणीम् ।

ईश्वरीं सर्व - भूतानां , तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ॐ सौः ॐ हंसः

उक्त मन्त्र १,६०,००० '**जप**' करे। **कमल-गट्टे की माला** से **कमल के आसन** पर अथवा **कौशेय वस्त्र के आसन** पर बैठकर '**जप**' करे। '**स्थण्डिल**' पर केसर, कस्तूरी, चन्दन, कपूर आदि सुगन्धित द्रव्य रखकर **श्रीलक्ष्मी देवी की मूर्ति की पूजा** कर '**जप**' करे। प्रति-दिन प्रातः और सायं, दो समय निश्चित संख्या में '**जप**' करे। '**जप**' पूर्ण होने पर **खीर, कमल पुष्प और तिल से दशांश होम** कर **तर्पण, मार्जन** आदि करे। इस '**प्रयोग**' से धन-धान्य, समृद्धि, सोना-चाँदी, रत्न आदि मिलते हैं और सम्पन्न महानुभावों से बड़ा मान मिलता है।

* * *

(१६)

ॐ हंसः ॐ आं। मनसः काममाकूतिं, वाचः सत्यमशीमहि।

पशूनां रूपमन्नस्य , मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥ ॐ हंसः ॐ आ

उक्त मन्त्र ८ लाख जपे। '**ऐं-लं-वं-श्रीं**'—को मन्त्र के साथ जोड़कर न्यास करे। यथा—

कर-न्यास : **ऐं लं वं श्रीं मनसः** अंगुष्ठाभ्यां नमः। **ऐं लं वं श्रीं काममाकूतिं** तर्जनीभ्यां स्वाहा। **ऐं लं वं श्रीं वाचः सत्यमशीमहि** मध्यमाभ्यां वषट्। **ऐं लं वं श्रीं पशूनां** अनामिकाभ्यां हुं। **ऐं लं वं श्रीं रूपमन्नस्य मयि** कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। **ऐं लं वं श्रीं श्रीः श्रयतां यशः** करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

अङ्ग-न्यास : **ऐं लं वं श्रीं मनसः** हृदयाय नमः। **ऐं लं वं श्रीं काममाकूतिं** शिरसे स्वाहा। **ऐं लं वं श्रीं वाचः सत्यमशीमहि** शिखायै वषट्। **ऐं लं वं श्रीं पशूनां** कवचाय हुं। **ऐं लं वं श्रीं रूपमन्नस्य मयि** नेत्र-त्रयाय वौषट्। **ऐं लं वं श्रीं श्रीः श्रयतां यशः** अस्त्राय फट्।

तां ध्यायेत् सत्य-सङ्कल्पां, लक्ष्मीं क्षीरोदन - प्रियाम्। ख्यातां सर्वेषु भूतेषु, तत्तद् ज्ञान - बल - प्रदाम्॥

उक्त '**ध्यान**' करे। **बिल्व-फल, बिल्व-काष्ठ, पलाश (ढाक) की समिधा, घृत, तिल, शक्कर आदि से दशांश 'होम'** कर **तर्पण, मार्जन** आदि करे। '**प्रयोग**' बड़ी संख्या का होने से पवित्र ब्राह्मण द्वारा कराया जा सकता है। इस '**प्रयोग**' से इच्छित वस्तु प्राप्त होती है और धन-धान्य, समृद्धि, वैभव-विलास बढ़ते हैं।

* * *

(१७)

ॐ आं ॐ ह्रीं। कर्दमेन प्रजा - भूता, मयि सम्भव-कर्दम !

श्रियं वासय मे कुले , मातरं पद्म - मालिनीम् ॥ ॐ आं ॐ ह्रीं

उक्त मन्त्र का ३२ लाख '**जप**' करे। मन्त्र के साथ '**वं श्रीं**' बीज जोड़कर न्यास करे।

स वत्सा गौरिव प्रीता, कर्दमेन यथेन्दिरा। कल्याणी मद्-गृहे नित्यं, निवसेत् पद्म-मालिनी॥

उक्त '**ध्यान**' करे। जीवित बछड़ेवाली गाय का और पुत्रवती, सौभाग्यवती स्त्रियों का पूजन करे। गो-शाला में बैठकर कमल-गट्टे की माला से '**जप**' करे। प्रति-दिन छोटे बच्चों को दूध पिलाए। '**जप**' पूर्ण होने पर **दशांश होम, मार्जन, ब्रह्म-भोज** आदि करे। '**प्रयोग**' बड़ा होने से ब्राह्मण द्वारा कराए। इस प्रयोग से वन्ध्या स्त्री को भाग्य-शाली पुत्र होता है। वंश-वृद्धि होती है। वंश में कोई निर्धन, दरिद्र, रोगी, अन्धा, कञ्जूस, पापी नहीं होता। '**होम**'-**शिव-लिङ्गी बीज, खीर, श्वेत तिल, दूर्वा, घी** से करे। **दूध** से '**तर्पण**' और '**मार्जन**' करे।

* * *

(१८)

ॐ क्लीं ॐ श्रीं। आर्द्रां यष्करिणीं यष्टिं, सुवर्णां हेम-मालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात - वेदो म आवह ॥ ॐ क्लीं ॐ श्रीं

उक्त मन्त्र के अनुष्ठान में **३,६०,००० तीन लाख साठ हजार** '**जप**' करना होता है। तालाब के किनारे अथवा कमल पुष्पों के आसन पर बैठकर, **कमल-गट्टे** या **स्वर्ण की** '**माला**' में प्रति-दिन **तीन हजार** '**जप**' करे। १२० दिन में '**प्रयोग**' पूर्ण होगा। **खीर, कमल-पुष्प** या **घी आदि से दशांश होम** करे। १०० **सुवासिनी स्त्रियों को भोजन** कराए और वस्त्र-भूषण, दक्षिणा दे। '**ध्यान**' निम्न प्रकार करे—

तां स्मरेदभिषेकार्द्रां, पुष्टिदां पुष्टि-रूपिणीं। रुक्माभां स्वप्न-धी-गम्यां, सुवर्णां स्वर्ण-मालिनीं।
सूर्यामैश्वर्य-रूपां च, सावित्रीं सूर्य-रूपिणीम्। आत्म-संज्ञां च चिद्रूपां, ज्ञान-दृष्टि-स्वरूपिणीं।
चक्षुः-प्राशदां चैव, हिरण्य-प्रचुरां तथा। स्वर्णात्मनाऽऽविर्भूतां च, जातवेदो म आवह॥

इस प्रयोग से ग्रहों की पीड़ा, ग्रह-बाधा-निवृत्ति होकर भाग्य का उदय होता है। अपना और अपने कुटुम्बियों के शरीर नीरोगी, दीर्घायुषी और प्रभावशाली होते हैं। जिससे मिलने की इच्छा हो, वह मनुष्य आ मिलता है।

* * *

(१९)

ॐ श्रीं ॐ हूँ। तां म आवह जात-वेदो, लक्ष्मीमनप - गामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो, दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहं॥ ॐ श्रीं ॐ हूँ

'**ॐ अस्य श्रीपञ्च-दश-मन्त्र ऋचः कुबेरो ऋषिः, भूत-धात्री लक्ष्मी देवता, प्रस्तार-पंक्तिश्छन्दः, ह्रीं श्रीं ह्रीं इति बीजानि, ममाभीष्ट-फल-प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः।**' इस प्रकार विनियोग कर **ऋष्यादि-न्यास** करे। '**ह्रीं श्रीं ह्रीं**' ये बीज लगाकर **अङ्ग-न्यास, हृदयादि-न्यास** करे। '**ध्यान**' इस प्रकार करे—

ध्याये लक्ष्मीं प्रहसित-मुखीं राज-सिंहासनास्थां। मुद्रा-शक्ति-सकल-विनुतां सर्व-संसेव्यनाम्।
अग्नौ पूज्यामखिल-जननीं हेम-वर्णां हिरण्यां। भाग्योपेतां भुवन-सुखदां भार्गवीं भूत-धात्रीम्॥

ज्वारी अथवा गेहूँ की राशि के ऊपर रेशमी आसन बिछाकर, **कमल-बीज की 'माला'** से नित्य **तीन हजार 'जप'** करे। कुल **सवा-लाख 'जप'** करे। सवा लाख '**जप**' पूर्ण होने पर **दूर्वा, खीर, मधु, घृत आदि से दशांश होम, तर्पण, मार्जन** आदि करे। इस '**प्रयोग**' के फल-स्वरूप लक्ष्मी स्थिर रहती है। विपुल प्रमाण में लक्ष्मी मिलती है। धन-धान्य, ऐश्वर्य, समृद्धि बढ़ती है। खोई हुई सम्पत्ति पुनः प्राप्त होती है। कार्य की महत्ता देखकर प्रयोग दो-गुना, चौ-गुना या अधिक करना चाहिए। '**प्रयोग**' के प्रारम्भ के कुछ दिनों बाद फल दिखाई पड़ता है।

* * *

(२०)

ॐ क्रौं ॐ क्लीं। आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं, पिङ्गलां पद्म-मालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं , जात - वेदो म आवहम ॥ ॐ क्रौं ॐ क्लीं

उक्त मन्त्र प्रति-दिन **३,००० जप** करे। **शुक्ल-पक्ष** की **पञ्चमी** से प्रारम्भ कर **पूर्णिमा** तक '**जप**' करे। फिर दूसरे मास में **शुक्ल पञ्चमी** से **पूर्णिमा** तक '**जप**' करे। सम्भव हो, तो **चन्द्र-मण्डल** के सामने दृष्टि स्थिर रख कर '**जप**' करे। अथवा **चन्द्रमा का प्रकाश** अपने शरीर पर पड़ सके—इस प्रकार बैठकर '**जप**' करे। **रुद्राक्ष, कमल-गट्टे की 'माला'** से **कौशेय वस्त्र** या **कमल-पुष्प-गर्भित आसन** पर बैठ कर '**जप**' करे। '**प्रयोग**' सोलह मास का है। जैसे-जैसे '**प्रयोग**' आगे बढ़ेगा, उसके प्रभाव दिखाई देने लगेंगे। सोलह से बत्तीस मास में मन की सभी अभिलाषाएँ पूर्ण हो जाएँगी। '**ध्यान**' इस प्रकार करे—

तां स्मरेदभिषेकार्द्रां, पुष्टिदां पुष्टि-रूपिणीम् । मैत्र्यादि-वृत्तिभिश्चार्द्रां, विराजत्-करुणा श्रियम् ॥
दयार्द्रां वेत्र-हस्तां च, व्रत-दण्ड-स्वरूपिणीम् । पिङ्गलाभां प्रसन्नास्यां, पद्म-माला - धरां तथा ॥
चन्द्रास्यां चन्द्र - रूपां च, चन्द्रां चन्द्र-धरां तथा । हिरण्मयीं महा - लक्ष्मीमृचभेतां जपेन्निशि ॥

मन्त्र के अक्षर से **विनियोग, ऋष्यादि-न्यास** कर **चन्द्र-मण्डल** में भगवती का उक्त '**ध्यान**' कर '**जप**' करे। **चन्द्रोदय** के बाद '**जप**' करे। सोलह मास तक '**प्रयोग**' कर **दशांश होम, तर्पण** आदि करे। पुनः सोलह मास का '**प्रयोग**' करना हो, तो **शुक्ल पञ्चमी** से प्रारम्भ करे। '**प्रयोग**' के सङ्कल्प में जितने मास तक '**प्रयोग**' करना हो, उसका उल्लेख करे। '**प्रयोग**' खण्डित न होने दे। **होम-खीर, समिधा, कमल-पुष्प, सफेद तिल, घृत, शहद** आदि से करे। **दशांश तर्पण, मार्जन** आदि करे। इस '**प्रयोग**' के प्रभाव से 'वचन'-सिद्धि होती है, प्रतिष्ठा, वैभव, विपुल प्रमाण में लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

विशेष : प्रत्येक प्रयोग में जिस कार्य-सिद्धि के लिए अथवा जिन अभिलाषा के लिए प्रयोग करना हो, उसका **सङ्कल्प** करे। यदि प्रयोग में **ध्यान और न्यास** नहीं दिया हो, तो सामान्य '**श्रीसूक्त-विधान**' के अनुसार करे। प्रत्येक प्रयोग करनेवाला अथवा ब्राह्मण द्वारा कराया जाय, तो वह प्रयोग-काल में सत्य बोले, क्रोध न करे, सादा भोजन करे, ब्रह्मचर्य पालन करे और जिस अभिलाषा से प्रयोग होता हो, उस कामना को अपने ध्यान में रखे।

* * *

'श्री-सूक्त' से सम्पुटित 'सप्तशती-पाठ'

* पूज्य कापालिक उद्‌बोधनानन्दनाथ जी

विशेष कर्तव्य—प्रयोग-कर्त्ता अपनी कामना के अनुरूप, '**श्री-सूक्त**' की उल्लखित ऋचा से '**सप्तशती**' के उल्लिखित मन्त्र का '**सम्पुटित पाठ**' करे या कराए। '**प्रयोग**' करने के पूर्व अपने नामाक्षर से मित्र वर्ण ऋचा का प्रयोग, जन्माङ्ग में स्थित ग्रहों के विचार-पूर्वक भाग्येश, लाभेश का विचार विशेष लाभदायी होता है। '**स्वस्ति-वाचन**' इत्यादि आवश्यक हैं ही। '**सम्पुट**'-**पाठ** करने का क्या फल है, यह अग्र-लिखित तालिका द्वारा स्पष्ट होता है। '**सम्पुट**' के साथ पाठ हो, तो अति उत्तम। अन्यथा '**सप्तशती**' के प्रत्येक श्लोक के ही साथ '**ऋचा**' का एक पाठ भी हो सकता है। अच्छा होगा, यदि एक-एक '**ऋचा**' से **२१ दिनों तक** '**सम्पुटित पाठ**' किया जाए और फल देखते चलें। जो अनुकूल हो, उसका '**पुरश्चरण**' शतार्ध या शत-चण्डी तक ले चलें।

सम्पुट-पाठ एवं उसके फल की तालिका

सम्पुट-पाठ हेतु ऋचा	दशांश हवन-सामग्री	विशेष क्रिया	फल
१ "**हिरण्य-वर्णा०**"	त्रि-मधु-प्लुत चम्पक पुष्प	९ सुवासिनी-पूजन ९ कुमारी-पूजन	सुवर्ण-वृद्धि
२ "**तां म आवह०**"	तिल आज्य		सुवर्ण-रजत-वृद्धि
३ "**आदित्य-वर्णे०**"		बिल्व-वृक्ष के नीचे सोना, २१ दिनों तक बिल्व-मूल में पाठ करना उसके बाद ९ सुवासिनी का पूजन कर उन्हें भोजन कराए	दरिद्रता-नाश धन-धान्य-समृद्धि
४ "**उपैतु मां०**"	त्रि-मधु-प्लुत जपा पुष्प		यश-वृद्धि
५ "**क्षुत्-पिपासा०**"	श्वेत तिल, सरोज, बिल्व-पत्र, घृत		महा-दारिद्र्य से पीड़ित भी सुख को प्राप्त करे,
६ "**गन्ध-द्वारां०**"	कमल, सफेद तिल, मधु-सर्पिषा-युक्त		क्षौमाम्बर, पट्टाम्बर-वृद्धि
७ "**कर्दमेन प्रजा-भूता०**"	नारिकेल, द्राक्षा त्रि-मधु युक्त		सर्व-सम्पत्ति-वृद्धि
८ "**आपः सृजन्तु०**"	जौ, चावल, घी त्रिमधु-युक्त		धान्य-वृद्धि
९ "**आर्द्रां पुष्करिणीं०**"	त्रि-मधु-युक्त पुआ		पुत्र, जन-बन्धु-समृद्धि
१० "**आर्द्रां यष्करिणीं०**"	दध्ना		देश, ग्राम, पृथ्वी-लाभ
११ "**यः शुचिः०**"	गो-क्षीर		समृद्धि

दारिद्र्य-दहन-विधि

★ पण्डित कृष्णानन्द मिश्र 'वैद्य', ककरा, प्रयाग-राज

परम पूज्य स्वामी श्रीअक्षोभ्यानन्दनाथ जी एवं पण्डित कृष्णानन्द मिश्र 'वैद्य' की कृपा से 'चण्डी'-पत्रिका के पाठकों को अनेकानेक दुर्लभ मन्त्र-यन्त्र की प्राप्ति हुई है। यहाँ 'वाणी-मर्मज्ञ' श्री जनार्दन शर्मा की प्रेरणा से कुल-भूषण पं० रमादत्त जी शुक्ल द्वारा सम्पादित एक और दुर्लभ 'दारिद्र्य-दहन-विधि'-नामक मन्त्र-साधना प्रस्तुत हो रही है। आशा है कि 'चण्डी' के पाठक-बन्धु इससे विशेष रूप से लाभान्वित होंगे।

—ऋतशील शर्मा

१. विनियोग—दाहिने हाथ में जल लेकर आगे का 'मन्त्र' पढ़कर जल भूमिस्थ किसी पात्र में गिरा दें—'ॐ अस्य श्रीकनक-धारा-स्तोत्र-मन्त्रस्य भगवान् शङ्कर ऋषिः; जगती छन्दः, श्री महा-लक्ष्मी भुवनेश्वरी देवता, श्रीं वीजं, ह्रीं शक्तिः, ऐं कीलकं, मम समस्त-दारिद्र-दुःख-निवारण-पूर्वक धनाकर्षण-पाठे विनियोगः।'

२. ऋष्यादि-न्यास—निर्दिष्ट अङ्गों को छूकर दिए गए मन्त्रों से ऋषि आदि का न्यास करे—'ॐ भगवान् शङ्कर-ऋषये नमः शिरसि, ॐ जगती-छन्दसे नमः मुखे, ॐ श्रीमहा-लक्ष्मी-भुवनेश्वरी-देवतायै नमः हृदि, ॐ श्रीं-वीजाय नमः गुह्ये, ॐ ह्रीं-शक्तये नमः पादयोः ॐ ऐं-कीलकाय नमः नाभौ, ॐ मम समस्त-दारिद्र-दुःख-निवारण-पूर्वक धनाकर्षण-पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।'

३. कराङ्ग-न्यास-ॐ श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां हुम्, ॐ श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ श्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

४. षडङ्ग-न्यास—ॐ श्रां हृदयाय नमः, ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ श्रूं शिखायै वषट्, ॐ श्रैं कवचाय हुम्, ॐ श्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्, ॐ श्रः अस्त्राय फट्।

५. ध्यान—हाथ जोड़कर माँ महा-लक्ष्मी का ध्यान करे। यथा—

ॐ लक्ष्मी क्षीर - समुद्र - राज-तनया श्रीरङ्ग-धामेश्वरी।
दासी - भूत समस्त-देव-वनितां त्रैलोक्य-दीपांगराम्।।
श्रीमन्मद-कराक्ष-लब्ध-वियद-ब्रह्मेन्द्र-गङ्गा-धराम्।
त्वां त्रैलोक्य-कुटुम्बिनीं सरसिजां वन्दे मुकुन्द-प्रियाम्।।

६. **मानस-पूजन**—इस प्रकार ध्यान करके **भगवती लक्ष्मी** का '**मानस पूजन**' करे। यथा—

१ **लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीमहा-लक्ष्मी-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि** (अधोमुख-कनिष्ठांगुष्ठ-मुद्रा)। २ **हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमहा-लक्ष्मी-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि** (अधोमुख-तर्जनी-अंगुष्ठ-मुद्रा)। ३ **यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीमहा-लक्ष्मी-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि** (ऊर्ध्व-मुख-तर्जनी-अंगुष्ठ-मुद्रा)। ४ **रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीमहा-लक्ष्मी-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि** (ऊर्ध्व-मुख-मध्यमा-अंगुष्ठ-मुद्रा)। ५ **वं अमृतात्मकं नैवद्यं श्रीमहा-लक्ष्मी-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि** (ऊर्ध्व-मुख-अनामा-अंगुष्ठ-मुद्रा)। ६ **शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीमहा-लक्ष्मी-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि** (ऊर्ध्व-मुख-सर्वांगुलि-मुद्रा)।

६. **श्रीकनक-धारा स्तव-पाठ**—उक्त प्रकार से 'मानस-पूजन' कर '**चिन्तामणि मन्त्र**' से सम्पुटित '**श्रीकनक-धारा-स्तव**' का पाठ करे। यथा—

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

अङ्गं हरेः पुलक - भूषणमाश्रयन्ती, भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
अङ्गीकृताखिल-विभूतिरपाङ्ग-लीला, माङ्गल्यदाऽस्तु मम मङ्गल-देवतायाः ।।१

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः, प्रेम - त्रपा - प्रणिहितानि गतागतानि।
माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या, सा मे श्रियं दिशतु सागर- सम्भवायाः।।२

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्दमानन्द - कन्दमनिमेषमनङ्ग - तन्त्रम् ।
आकेकर-स्थित-कनीनिक-पक्ष्म-नेत्रम्, भूत्यै भवेन्मम भुजङ्ग-शयाङ्गनायाः।।३

बाह्वान्तरे मधु-जितः श्रित-कौस्तुभे या, हाराव्रलीव हरि-नील-मयी विभाति।
काम-प्रदा भगवतोऽपि कटाक्ष-माला, कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः।।४

कालाम्बुदालि - ललितोरसि कैटभारेर्धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव।
मातुः समस्त-जगतां महनीय-मूर्तिर्भद्राणि मे दिशतु भार्गव-नन्दनायाः।।५

प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत्-प्रभावान्, माङ्गल्य-भाजि मधु-माथिनि मन्मथेन।
मय्यापतेत् तदिह मन्थरमीक्षणार्द्धम्, मन्दालसं च मकरालय- कन्यकायाः।।६

विश्वामरेन्द्र-पद-विभ्रम-दान-दक्षमानन्द-हेतुरधिकं मुर-विद्विषोऽपि।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्द्धमिन्दीवरोदर - सहोदरमिन्दिरायाः।।७

इष्टा विशिष्ट-मतयोऽपि यया दयार्द्रदृष्ट्या त्रिविष्टप-पदं सुलभं लभन्ते।
दृष्टिः प्रहृष्ट-कमलोदर-दीप्तिरिष्टाम्, पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्कर-विष्टरायाः।।८

दद्याद् दयानुपवनो द्रविणाम्बु-धारामस्मिन्नकिञ्चन-विहङ्ग-शिशौ विषण्णे।
दुष्कर्म-धर्ममपनीय चिराय दूरं, नारायण - प्रणयिनी-नयनाम्बु-वाहः।।९

गीर्देवतेति गरुड-ध्वज-सुन्दरीति, शाकम्भरीति शशि-शेखर- वल्लभेति।
सृष्टि-स्थिति-प्रलय-केलिषु संस्थितायै, तस्यै नमस्त्रिभुवनैक- गुरोस्तरुण्यै ।।१०

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभ-कर्म-फल-प्रसूत्यै, रत्यै नमोऽस्तु रमणीय-गुणार्णवायै।
शक्त्यै नमोऽस्तु शत-पत्र-निकेतनायै, पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तम-वल्लभायै।।११

नमोऽस्तु नालीक-निभाननायै, नमोऽस्तु दुग्धोदधि-जन्म-भूत्यै।
नमोऽस्तु सोमामृत - सोदरायै, नमोऽस्तु नारायण-वल्लभायै।।१२

नमोऽस्तु देव्यै भृगु-नन्दनायै, नमोऽस्तु विष्णोरुरसि स्थितायै।
नमोऽस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै, नमोऽस्तु दामोदर-वल्लभायै।।१३

नमोऽस्तु हेमाम्बुज-पीठिकायै, नमोऽस्तु भूमण्डल-नायिकायै।
नमोऽस्तु देवादि-दया-परायै, नमोऽस्तु शार्ङ्गायुध-वल्लभायै।।१४

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं, त्रयी - मयीं त्रिभुवन - मातरं रमाम्।
गुणाधिका गुरु-तर-भाग्य-भागिनो, भवन्ति ते भुवि बुध-भाविताशयाः।।१५

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

७. श्रीसूक्त-पाठ—अब 'चिन्तामणि मन्त्र' से सम्पुटित 'श्रीसूक्त' का पाठ करे। यथा—

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

हिरण्य-वर्णां हरिणीं, सुवर्ण-रजत-स्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जातवेदो म आवह ।।१।।

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

तां म आवह जातवेदो, लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं, गामश्वं पुरुषानहम् ।।२।।

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

अश्व-पूर्वां रथ-मध्यां, हस्ति-नाद-प्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये, श्रीर्मा देवी जुषताम् ।।३।।

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

कांसोऽस्मि तां हिरण्य-प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्म - वर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।४।।

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव-जुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ।।५।।

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

आदित्य - वर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ।।६।।

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

उपैतु मां देव - सखः, कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्, कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ।।७।।

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च, सर्वां निर्णुद मे गृहात् ।।८।।

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

गन्ध-द्वारां दुराधर्षां, नित्य-पुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्व-भूतानां, तामिहोपह्वये श्रियम् ।।९।।

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

मनसः काममाकूतिं, वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य, मयि श्रीः श्रयतां यशः।।१०।।

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

कर्दमेन प्रजा - भूता, मयि सम्भव-कर्दम!
श्रियं वासय मे कुले, मातरं पद्म-मालिनीम् ।।११।।

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

आपः सृजन्तु स्निग्धानि, चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ।।१२।।

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं, पिङ्गलां पद्म-मालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जातवेदो म आवह ।।१३।।

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

आर्द्रां यष्करिणीं यष्टिं, सुवर्णां हेम-मालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जातवेदो म आवह ।।१४।।

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनप - गामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम्।।१५।।

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
श्रियः पञ्च-दशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ।।१६।।

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

८. विलोम श्री कनक-धारा स्तव-पाठ—अन्त में श्री चिन्तामणि मणि से सम्पुटित 'श्रीकनक-धारा स्तव' का विलोम-पाठ करे। यथा—

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं, त्रयी-मयीं त्रिभुवन-मातरं रमाम्।
गुणाधिका गुरु-तर-भाग्य-भागिनो, भवन्ति ते भुवि बुध-भाविताशयाः।।१५
नमोऽस्तु हेमाम्बुज-पीठिकायै, नमोऽस्तु भूमण्डल-नायिकायै।
नमोऽस्तु देवादि-दया-परायै, नमोऽस्तु शार्ङ्गायुध-वल्लभायै।।१४
नमोऽस्तु देव्यै भृगु-नन्दनायै, नमोऽस्तु विष्णोरुरसि स्थितायै।
नमोऽस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै, नमोऽस्तु दामोदर-वल्लभायै।।१३
नमोऽस्तु नालीक-निभाननायै, नमोऽस्तु दुग्धोदधि-जन्म-भूत्यै।
नमोऽस्तु सोमामृत - सोदरायै, नमोऽस्तु नारायण-वल्लभायै।।१२

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभ-कर्म-फल-प्रसूत्यै, रत्यै नमोऽस्तु रमणीय-गुणार्णवायै।
शक्त्यै नमोऽस्तु शत-पत्र-निकेतनायै, पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तम-वल्लभायै।।११

गीर्देवतेति गरुड-ध्वज-सुन्दरीति, शाकम्भरीति शशि - शेखर- वल्लभेति।
सृष्टि-स्थिति-प्रलय-केलिषु संस्थितायै, तस्यै नमस्त्रिभुवनैक- गुरोस्तरुण्यै ।।१०

दद्याद् दयानुपवनो द्रविणाम्बु-धारामस्मिन्नकिञ्चन-विहङ्ग-शिशौ विषण्णे।
दुष्कर्म - धर्ममपनीय चिराय दूरं, नारायण-प्रणयिनी-नयनाम्बु-वाहः।।९

इष्टा विशिष्ट-मतयोऽपि यया दयार्द्रदृष्ट्या त्रिविष्टप-पदं सुलभं लभन्ते।
दृष्टिः प्रहृष्ट-कमलोदर-दीप्तिरिष्टाम्, पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्कर-विष्टरायाः।।८

विश्वामरेन्द्र-पद-विभ्रम-दान-दक्षमानन्द-हेतुरधिकं मुर-विद्विषोऽपि।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्द्धमिन्दीवरोदर - सहोदरमिन्दिरायाः।।७

प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत्-प्रभावान्, माङ्गल्य-भाजि मधु-माथिनि मन्मथेन।
मय्यापतेत् तदिह मन्थरमीक्षणार्द्धम्, मन्दालसं च मकरालय- कन्यकायाः।।६

कालाम्बुदालि-ललितोरसि कैटभारेर्धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव।
मातुः समस्त-जगतां महनीय-मूर्तिर्भद्राणि मे दिशतु भार्गव-नन्दनायाः।।५

बाह्वान्तरे मधु-जितः श्रित-कौस्तुभे या, हारावलीव हरि-नील-मयी विभाति।
काम-प्रदा भगवतोऽपि कटाक्ष-माला, कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः।।४

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्दमानन्द - कन्दमनिमेषमनङ्ग - तन्त्रम्।
आकेकर-स्थित-कनीनिक-पक्ष्म-नेत्रम्, भूत्यै भवेन्मम भुजङ्ग-शयाङ्गनायाः।।३

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः, प्रेम - त्रपा - प्रणिहितानि गतागतानि।
माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या, सा मे श्रियं दिशतु सागर- सम्भवायाः।।२

अङ्गं हरेः पुलक - भूषणमाश्रयन्ती, भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
अङ्गीकृताखिल-विभूतिरपाङ्ग-लीला, माङ्गल्यदाऽस्तु मम मङ्गल-देवतायाः।।१

क-ए-ई-ल-ह्रीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं स-क-ल-ह्रीं श्रीं-क्लीं-ॐ श्रीं-ह्रीं-ऐं ॐ-ह्रीं-ॐ

मुम्बई-शाक्त-सम्मेलन
(आठवाँ अधिवेशन)

संक्षिप्त विज्ञप्ति

ऑटो ड्राइवर के आँखों में आँसू!

हम '**मुम्बई-शाक्त-सम्मेलन**' में **बीजापुर (कर्नाटक)** से अपने बड़े भाई **श्री विष्णुपन्त जी** के साथ आए थे। **शोलापुर (महाराष्ट्र)** में, हमारे साथ **श्री नाबरिया जी** सम्मिलित हुए। '**शाक्त-सम्मेलन**' तीन दिन था। पहले दिन का कार्य-क्रम विधि-वत् सम्पन्न हुआ। दूसरे दिन जब हम तीनों एक ऑटो में '**शाक्त-सम्मेलन**' हेतु निश्चित स्थल को जा रहे थे, तब रास्ते में हम लोगों के बीच **आध्यात्मिक चर्चा** हुई। हम लोगों की **आध्यात्मिक चर्चा** को सुनकर ऑटो को चलाते हुए ड्राइवर ने पीछे मुड़कर हम लोगों को देखा और कुछ कहना चाहा, किन्तु कह न सका। कुछ देर बाद जब हम '**शाक्त-सम्मेलन**' हेतु निर्धारित स्थल पर पहुँचे, तब हमारे बड़े भाई ने ड्राइवर से पूछा–'भय्या कितने रु० देना है?' इस पर ड्राइवर ने कहा–'नहीं साहब आप महान् हैं, आपसे क्या पैसा लेना! कमाई तो मैं करता हूँ, लेकिन आप जैसे गुरु से नहीं!!'

ड्राइवर की बातें सुनकर हमें बहुत आश्चर्य हुआ। ड्राइवर जो कह रहा था, उसे हम मज़ाक भी समझ रहे थे। हमारे बड़े भाई साहब ने उसे फिर से समझाया कि यह आपकी मेहनत की कमाई है और आप इसे कैसे ठुकरा सकते हो? ड्राइवर ने पुनः कहा नहीं मुझे आप लोगों से कमाई नहीं लेनी है। यदि आप देना ही चाहते हैं, तो हमें आशीर्वाद-स्वरूप एक रु० दे दीजिए।

यह सुनकर हम तीनों आश्चर्य-चकित हो गए। उसने हमसे एक ही रु० लिया और आँखों में आँसू भरकर, अपने बैठे हुए स्थल से उतरकर हमारे बड़े भाई साहब के पैर छुए व हमसे भी आशीर्वाद लिया और ऑटो स्टार्ट कर चला गया।

'**मुम्बई**' **में** '**अध्यात्म**' **के कैसे-कैसे प्रेमी** लोग हैं, यह देखकर हमें बहुत आश्चर्य हुआ।

-वासुदेव उपाध्याय
२८० सिद्धि समृद्धि, बङ्गलौर (कर्नाटक)

'**मुम्बई-शाक्त-सम्मेलन**' में
श्री वेणीमाधव जी त्रिपाठी द्वारा
'**कुल-भूषण**' **पं० रमादत्त शुक्ल** जी
के सम्मान की दुर्लभ छवि।

'तन्त्र-शास्त्र' -विषयक दो महत्त्व-पूर्ण पुस्तकें

'कुल-भूषण' पं० रमादत्त जी शुक्ल

द्वारा सम्पादित एवं हिन्दी-रूपान्तरण

१. हिन्दी कुलार्णव तन्त्र

अनुदान १००-००

२. हिन्दी महा-निर्वाण तन्त्र

अनुदान १५०-००

के सजिल्द नवीन संस्करण हेतु

सम्पर्क करें-

'श्रीचण्डी-धाम', कल्याण मन्दिर प्रकाशन

अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

दूरभाष (०५३२) २५०२७८३, ०९४५०२२२७६७